



‘वार्षिक प्रतिवेदन’

2008-2009

पोस्ट त्रिपुरादेवी,, वाया बेरीनाग, जनपद पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड 262531
दूरभाष : 05964 244943
ई-मेल : info@avani-kumaon.org
वेबसाइट : www.avani-kumaon.org

विषय सूची

1. भूमिका	3
2. अक्षय ऊर्जा तकनीकी का विकास एवं प्रचार-प्रसार	6
2.1 सोलर फोटोवोल्टाईक	
2.2 सोलर थर्मल	
2.3 मैकेनिकल कार्यशाला	
2.4 पाईन नीडल गैसीफायर	
2.5 बायोगैस	
3. नये डिजाईनों के विकास से परम्परागत हस्त-शिल्प का संरक्षण एवं हस्तनिर्मित प्राकृतिक रंगों के उत्पाद	12
3.1 अवनी टीम का क्षमता विकास	
3.2 उत्पाद डिजाईन	
3.3 मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग	
3.4 प्राकृतिक रंगाई	
4. महिला सशक्तीकरण	21
4.1 स्वयं सहायता समूह	
4.2 बालिका शिक्षा	
4.3 वयस्क साक्षरता	
5. वर्षा के जल का संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल का पुनः प्रयोग	25
6. प्राकृतिक कृषि	26
7. रेशम की खेती	28
7.1 प्रशिक्षण एवं कोकून पालन	
8. स्वास्थ्य सुरक्षा	32
8.1 स्वास्थ्य बीमा	
8.2 स्वास्थ्य शिविर	
9. कार्यशालाएँ एवं बैठकें	33
10. विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक	33
11. अवनी में मेहमान	33
12. अन्य संस्थानों से सहयोग	33
13. हमारे वित्तीय सहयोगी	34
14. व्यक्तिगत दानदाता 2008-2009	34
15. व्यक्तिगत सहयोग हेतु आभार	35
16. केस स्टडी	36
17. वित्तीय सारांश	45

भूमिका

यह वर्ष परिवर्तनों एवं चुनौतियों के साथ-साथ फलदायी यात्रा के रूप में बीता। विगत 12 वर्षों के अपने कार्यों के दौरान हमने उत्तराखंड राज्य के 3 जनपदों के 96 गाँवों में अपने कार्यों का विस्तार किया है। जनपद बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ में वृहत स्तर पर कार्य करने के साथ-साथ इस वर्ष हमने जनपद अल्मोड़ा में भी कार्य करना आरंभ किया है। आगामी वर्षों में हम जनपद अल्मोड़ा में अपने कार्य के विस्तार की कार्ययोजना तैयार कर रहे हैं। अवनी ने परंपरागत हस्तशिल्प, उपयुक्त तकनीकी एवं कृषि आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर जीविकोपार्जन अवसरों के सृजन की दिशा में अपने कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया है।

इस वर्ष के दौरान संस्था के संस्थापक सदस्यों की जिम्मेदारी में बदलाव किया गया। संस्था सचिव के रूप में कार्यरत सुश्री रश्मि भारती द्वारा व्यक्तिगत कारणों से अपने पद से इस्तीफा दिया गया। सुश्री भारती उन कार्यक्रमों से जुड़ी रहेंगी जिनमें वह अपनी सेवाएँ दे रही हैं। वर्तमान में श्री रजनीश कुमार जैन सचिव पद की जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे।

जैसा कि पूर्व में सूचित किया गया कि अवनी द्वारा विगत वर्ष अपनी “कोर टीम” के साथ रणनीतिक कार्ययोजना का **दस्तावेज** तैयार किया गया। इस कार्ययोजना के **आधार** पर इस वर्ष भविष्य के लिये व्यवसाय योजना निर्माण की दिशा में कार्य किया गया है। हमारे द्वारा संचालित उद्यम क्रमशः सौर उपकरण निर्माण एवं हस्तशिल्प उत्पाद विगत वर्षों में मजबूती से आगे बढ़े हैं। दोनों उद्यम जिला उद्योग केन्द्र के साथ पंजीकृत कर लिये गये हैं।

अवनी के कार्यों एवं उत्पाद श्रृंखला के प्रस्तुतीकरण हेतु हमें इस वर्ष इटली के शहर तौरिनो में आयोजित बुनकर मेले में आमंत्रित किया गया। हमारे उत्पादों को फ्रांस के शहर पेरिस में आयोजित ‘एथिकल शो’ में भी प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शन में दिल्ली स्थित प्रतिष्ठान सत्य ज्योति की सहायता प्राप्त की गई। इस दौरान हमारे द्वार दक्षिणी फ्रांस में अवनी के उत्पादों के प्रदर्शन एवं बिक्री हेतु आयोजित विशेष आयोजन में भी सहभागिता की गई।

प्राकृतिक रंगाई एवं पेंटिंग रंग बनाने के लिये पौधों से “रंग द्रव्य” निकालने हेतु स्प्रे ड्राइंग मशीन की स्थापना अवनी केन्द्र में की जा चुकी है। रंग द्रव्य के सैम्पल तैयार करने के बाद अब हम उनसे रंगाई एवं पेंटिंग का कार्य संपादित कर रहे हैं। ग्रामीण स्तर पर अधिकाधिक आय उपार्जन के स्रोत उपलब्ध कराने हेतु हम इसकी बिक्री हेतु प्रयासरत हैं।

जनपद अल्मोड़ा के 2 गाँवों में पाईन नीडल गैसीफायर के माध्यम से रसोई गैस उपलब्ध कराने हेतु संचालित कार्यक्रम अपने क्रियान्वयन की दिशा में एक कदम आगे बढ़ गया है। हमें आशा है कि अन्य सहयोगियों के साथ-साथ हम अक्षय ऊर्जा मंत्रालय का सहयोग भी इस कार्य हेतु प्राप्त कर पायेंगे।

अवनी द्वारा संचालित कार्यक्रमों के **आंकलन** के प्रभावों के संदर्भ में सुश्री कैथरीन कौनफिनो एवं श्री मिशेल कौबलिन द्वारा निर्मित की जा रही डाक्यूमेंट्री फिल्म पूर्ण हो गई है। इस कार्य हेतु खर्च धनराशि का एक भाग श्री अभिराम सेठ से व्यक्तिगत सहयोग के रूप में प्राप्त हुआ तथा दूसरा भाग संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित संगठन चैरिटेबल एड फंड द्वारा वहन किया गया। ग्राम चनकाना में लकड़ी एवं मिट्टी से निर्मित किये जा रहे निर्माणाधीन प्रशिक्षण भवन का निर्माण कार्य लकड़ी की उनउपलब्धता के कारण लंबित रहा। अब हमें भवन निर्माण हेतु आवश्यक सामग्री उपलब्ध हो गई है। हमें उम्मीद है कि अगले वर्ष के अंत तक हम इस भवन का निर्माण करने में सफल होंगे।

हम अपने उन समस्त मित्रों एवं शुभचिन्तकों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अवनी के कार्यों को आगे बढ़ाया तथा हमारे प्रयासों को फलीभूत करने हेतु अमूल्य सहयोग एवं अंशदान प्रदान किया। **विभिन्न** फील्ड सेंटरों के माध्यम से **अवनी** द्वारा गाँवों में संचालित कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित प्रकार हैं—

क्रम सं०	गाँव का नाम	कताई बुनाई	सौर उपकरण स्थापना	रेशम की खेती	महिला समूह ऋण एवं बचत	महिला समूह के साथ आय उपाजक कार्यक्रम	चर्म कम्पोजिंग	बायो गैस	बालिका शिक्षा	वयस्क साक्षरता	चीड़ की पत्ती संग्रहण	वर्षाती जल संग्रहण
धरमघर केन्द्र												
1	सिमगढ़ी	✓	✓		✓	✓	✓		✓			✓
2	सौक्यूडा	✓	✓									✓
3	धरमघर	✓	✓		✓	✓						✓
4	महरोड़ी		✓	✓	✓	✓	✓		✓			✓
5	लमजिंगड़ा		✓		✓	✓	✓					
6	कराला	✓				✓						
7	दसौली	✓										
8	थुमा	✓										
9	धुरा	✓										
10	दराती	✓										
11	बास्ती			✓	✓							
12	दुदिला				✓							
13	एराड़ी				✓							
दिगोली केन्द्र												
1	मांणा	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓			
2	दिगोली	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓
3	धौलानी	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
4	मटकोली	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓			
5	कालीगाड़	✓										
6	नायल	✓										
7	डाना		✓	✓			✓					
8	रैतोली			✓								
9	देवल		✓	✓					✓			
10	सिलिंगिया		✓		✓	✓						
11	चन्तोला		✓	✓	✓	✓	✓					✓
12	औलानी	✓	✓		✓	✓			✓			
13	सिमायल	✓	✓	✓	✓	✓						✓
14	ठांगा	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
15	रावतसेरा		✓									
16	भयूँ		✓					✓				
17	नरगोली			✓								
18	देवलेत			✓		✓						
19	ढानण			✓		✓						
20	पैठौंड					✓						
21	धुरा					✓						
22	तलाड़ा					✓						
23	पाटाडुंगरी			✓								
24	सानिउडियार			✓								
25	दौला			✓								
26	कन्यागाड़			✓								
27	लेटगाड़ी			✓								
28	पानीगाड़			✓								
त्रिपुरादेवी केन्द्र												
1	त्रिपुरादेवी	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
2	भंडारीगाँव	✓										
3	राईआगर	✓										✓
4	बना	✓			✓	✓						
5	मनीपुर	✓										
6	हस्यूडी	✓			✓						✓	
7	बोराखेत	✓		✓								
8	मुंगराऊँ	✓			✓	✓						

क्रम सं०	गाँव का नाम	कताई बुनाई	सौर उपकरण स्थापना	रेशम की खेती	महिला समूह ऋण एवं बचत	महिला समूह के साथ आय उपाजक कार्यक्रम	वर्मि कम्पोस्टिंग	बायो गैस	बालिका शिक्षा	वयस्क साक्षरता	चीड़ की पत्ती संग्रहण	वर्षाती जल संग्रहण
9	बेरीनाग	✓			✓							
10	सेरा पहर				✓	✓						
11	रावलगाँव				✓	✓	✓					
12	सेला				✓		✓					
13	कन्यूरपानी											
14	ज्यूलागाँव				✓		✓					
15	पिपली				✓							
16	जखेड़ी			✓								
17	स्याल्वे			✓								
18	वर्षायत			✓								
19	हिपा			✓								
20	गडेरा				✓							
21	बुसैल		✓									
22	सलौड़		✓									
23	गुरैना रजवार		✓									
24	बहिलकोट		✓									
25	सेरागढ़ा		✓									
26	फालरौ खरचौड़			✓								
27	राई			✓								
28	ब्याती			✓								
29	भिनगड़ी				✓				✓			
30	बल्टा			✓								
31	सानीखेत			✓								
32	मुसलगाड़			✓								
33	नाली			✓								
34	बैसाली			✓								
35	कफाली											
चनकाना केन्द्र			✓		✓	✓	✓	✓			✓	
1	चनकाना	✓										
2	मूनी	✓										
3	गोदा	✓										
4	पुँगरखोली			✓								
5	लिंगुरानी			✓								
6	मझेड़ा	✓			✓	✓						
सुकना केन्द्र												
1	सुकना	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓		✓
2	घांगल	✓	✓									
3	बानड़ी	✓	✓					✓				
4	राममंदिर				✓							
5	धौलानी	✓										
6	ग्वाल	✓										
7	गोल्ती			✓								
8	चाख			✓	✓							
9	ओखरानी				✓							
गढ़तिर केन्द्र												
1	गढ़तिर	✓										
2	भनेलगाँव	✓										
3	पुरिंग	✓										
4	पटोली			✓								
5	बेलकोट			✓								
6	पुरानाथल			✓								
7	डांगीगाँव			✓								

वर्ष 2008-09 के दौरान संपादित कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

2. अक्षय ऊर्जा तकनीकि का विकास एवं प्रचार-प्रसार :-

2.1 रोशनी हेतु प्रयोग

अवनी संस्था कुमाऊँ क्षेत्र के गाँवों में सौर ऊर्जा के प्रचार-प्रसार हेतु वर्ष 1997 से कार्यरत है। विगत 12 वर्षों में हमने 245 गाँवों एवं तोकों के 1767 परिवारों को सौर उपकरणों से लाभान्वित किया है।

यह कार्यक्रम 23 ग्राम स्तरीय सौर ऊर्जा समितियों द्वारा संचालित है, जो कि वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर हैं तथा जिनके पास स्थापित सौर उपकरणों के रख-रखाव हेतु प्रशिक्षित तकनीशियनों की एक टीम है। ग्रामीण स्तर पर स्थापित समितियाँ अन्य कार्यक्रमों हेतु धनराशि के स्थानांतरण एवं प्रबंधन हेतु सहजकर्ता की भूमिका भी निभा रही हैं। इन कार्यक्रमों में प्रमुख रूप से रेशम की खेती हेतु ईरी कीटपालन गृहों के निर्माण के लिए आबंटित धनराशि का प्रबंधन शामिल है। इस वर्ष ग्राम चन्तोला, माणा एवं ढांगा की सौर ऊर्जा समितियों के खाते में ₹0 2,42,000 की धनराशि 23 ईरी कीटपालन गृहों के निर्माण हेतु स्थानांतरित की गई। इस वर्ष के दौरान हमने माइक्रो इंश्योरेंस अकादमी नई दिल्ली के सहयोग से समुदाय प्रबंधित उद्यम एवं उसके सफलता के कारकों का विश्लेषण किया। अकादमी के प्रतिनिधियों द्वारा सौर ऊर्जा समितियों का अध्ययन किया तथा लाभार्थियों के साथ साक्षात्कार किया गया। इस अध्ययन के परिणाम अगले वर्ष प्रकाशित किये जायेंगे।

(अ) प्रचार-प्रसार :-

सौर उपकरणों के निर्माण एवं बिक्री उद्यम को सशक्त करने एवं विस्तार हेतु हमने 3 सौर उपकरणों के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया आरंभ की है। इन उपकरणों में शामिल हैं।

- घरेलू सौर बत्ती
- सोलर स्ट्रीट लाईट
- सोलर लालटेन

सौर उपकरणों के प्रमाणीकरण हेतु टेस्टिंग के लिये समस्त आवश्यक उपकरण प्राप्त करके अवनी इलैक्ट्रॉनिक कार्यशाला में उनकी स्थापना कर दी गई है। प्रमाणीकरण हेतु आवेदन अप्रैल 2009 में किया जायेगा। हमें उम्मीद है कि अगले वर्ष तक हम सौर उपकरणों के निर्माता ईकाई के रूप में प्रमाणित हो जायेंगे। प्रमाण पत्र की प्राप्ति के बाद सौर उपकरणों की बिक्री के वृहत बाजार तक हम अपनी पहुँच बना पायेंगे जिससे अंतोतगत्वा ग्रामीण तकनीशियनों हेतु रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

इस प्रक्रिया के तहत हमने जिला उद्योग केन्द्र में भी पंजीकरण करा लिया है। अब यह उद्यम कुमाऊँ सोलर इंडस्ट्री के रूप में पंजीकृत हो गया है।

हमने तकनीकि के विकास से सौर ऊर्जा को उन गरीब परिवारों की क़य क्षमता में रखने की दिशा में कार्य जारी रखा है जिन्हें सरकारी छूट प्राप्त नहीं हो पाती। सौर उपकरणों की कीमत कम करने हेतु हमने एलईडी आधारित सौर उपकरणों के विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

तकनीकि विकास के माध्यम से कम कीमतों में एलईडी आधारित लालटेनों को उपलब्ध कराने से हम इनकी बिक्री बढ़ाने में सफल हुए हैं।

- इस वर्ष के दौरान अवनी द्वारा कुल 117 सौर लालटेनें बेची गई जिसमें से 112 एलईडी लालटेनें शामिल हैं।
- हमने स्थानीय स्तर पर 29 सोलर टार्च भी बिकी किये हैं। रामकृष्ण शारदा मिशन पंगोट, नैनीताल में एक एलईडी आधारित स्ट्रीट लाईट की स्थापना की गई।
- ग्रामीण स्तर पर 40 बैट्रियों की स्थापना की गई।
- सौर समितियों द्वारा ग्रामीण स्तर पर गरीब परिवारों को सौर उपकरणों की खरीद हेतु ऋण उपलब्ध करवाया गया। अब तक कुल मिलाकर 182 परिवारों को ₹0 10,90,180 का ऋण उपलब्ध करवाया गया। इसमें से विगत 6 वर्षों में ₹0 8,10,280 का ऋण लाभार्थियों द्वारा लौटाया गया है।
- सौर ऊर्जा चालित चर्खों एवं रोशनी उपकरणों की स्थापना हेतु ₹0 74,700 की राशि तकनीकी कोष से ऋण के रूप में उपलब्ध कराई गई। ₹0 32,950 की धनराशि अब तक वापस की जा चुकी है। इसमें से ₹0 12,350 की राशि इस वर्ष लाभार्थियों द्वारा जमा की गई है।
- वर्ष 2009 तक 23 ग्रामीण समितियों द्वारा कुल ₹0 32,86,994 की धनराशि रख-रखाव कोष में जमा की गई।
- ग्रामीण स्तर पर एकत्रित कोष से समितियों द्वारा पूर्व में स्थापित उपकरणों की 9 बैट्रियां बदली गयीं।
- विगत वर्ष समितियों द्वारा कुल ₹0 47,800 की धनराशि तकनीशियनों के वेतन खाते में जमा की गयी।
- अवनी की सौर कार्यशाला में 9 तकनीशियनों की टीम है। इनमें से चार महिला तकनीशियन हैं। इस वर्ष तकनीशियनों द्वारा कुल 146 फील्ड भ्रमण किये गये।

समितियों द्वारा एकत्रित कोष का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है—

ग्राम समिति का नाम	2008-09 में रख-रखाव कोष में जमा धनराशि	31 मार्च 2009 तक जमा कुल धनराशि	वर्ष 2008-09 में दिया गया ऋण	31 मार्च 2009 तक दिया गया कुल ऋण	31 मार्च 2009 तक कुल ऋण वापसी	वर्ष 2008-09 में समितियों द्वारा सौर तकनीशियन के वेतन खाते में अंशदान
देवल-ए	2,100	94,424	0	11,980	7,700	3600
देवल ब	0	6,270	0	0	0	0
सौक्युड़ा	1,700	39,335	0	41,930	23,600	0
सिलिंगिया	1,450	1,21,368	0	1,01,830	41,250	0
मांणा	2,300	1,16,964	0	95,840	80,580	0
महरौड़ी	3,900	2,08,346	0	3,77,370	3,45,100	0
ठांगा	1,870	2,67,996	0	2,33,610	1,90,390	0
उडेरिया	0	71,315	0	0	0	0
रावतसेरा	1,500	85,738	0	5,990	4,200	0
भयूँ	0	1,73,838	0	0	0	0
चंतोला	1900	1,47,826	0	47,920	27,540	0
सिमगढ़ी	0	1,63,130	0	1,25,790	44,800	0
उडियारी	0	50,602	0	0	0	0
धरमघर	0	9,028	0	0	0	0
क्वेराली	0	8,206	0	0	0	0
सिमायल	3,200	1,77,948	0	47,920	45,120	0
कुल	19,920	17,42,334	0	10,90,180	8,10,280	3,600

तालिका 2

ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के तहत लाभान्वित परिवार	वर्ष 2008-09 में रखरखाव कोष में जमा धनराशि	मार्च 2009 तक जमा कुल धनराशि	वर्ष 2008-09 में समितियों द्वारा तकनीशियन वेतन खाते में अंशदान
बुसैल	0	2,97,900	0
गुरना रजवार	1,500	54,380	0
बहिलकोट	4,000	53,440	3,700
हिपा	6,150	2,80,350	6,150
गोल्ती	16,500	4,19,610	16,500
सेरागढ़ा	14,200	3,13,600	14,200
फालरौ खरचौड़	3,650	1,25,380	3,650
कुल	46,000	15,44,660	44,200

वर्ष 2008-09 के दौरान निर्मित उपकरणों एवं सौर कार्यशाला का विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3

बस्तु विवरण	निर्मित	बिक्री
लालटेन 12 वोल्ट	16	5
लालटेन 6 वोल्ट	180	112
कुल लालटेन	196	117
सी एफ एल लैंप	26	18
घरेलू सौर बत्ती		0
सोलर टार्च		29
बैट्री		40
सौर पैनल		4

लालटेन/लैंप बिक्री से आय	2,27,330
कंपोनेंट बिक्री एवं रिपेयर से आय	37,311
सौर पैनल बिक्री से आय	4,570
टार्च बिक्री से आय	10,900
बैट्री बिक्री से आय	63,230
सोलर स्ट्रीट लाइट सेट बिक्री से आय	22,000
अन्य आय	37,891
कुल आय	4,03,232

(ब) क्षमता विकास :-

इस वर्ष ग्राम सलौड़ एवं ग्राम भूनी से 2 युवाओं को सौर तकनीशियन के रूप में प्रशिक्षित किया गया। करम मार्ग दिल्ली के 4 प्रशिक्षणार्थियों को त्रिपुरादेवी में सौर तकनीकी एवं सोलर वाटर हीटर के निर्माण हेतु प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 4 में दिया गया है।

तालिका 4

गाँव/संस्थान का नाम	प्रशिक्षणार्थी संख्या	प्रशिक्षण विषय	प्रशिक्षण अवधि
ग्राम भूनी	1	सौर तकनीकि	15-04-08 से 15-7-08
ग्राम सलौड़	1	सौर तकनीकि	16-05-08 से 16-08-08
करम मार्ग, दिल्ली	4	सौर तकनीकि एवं सौर वाटर हीटर निर्माण	3-6-08 से 19-6-08

2.2 सोलर थर्मल उपकरण

(अ) सोलर वाटर हीटर :-

इस वर्ष के दौरान एक सोलर वाटर हीटर की बिक्री की गई ।

वाटर हीटर की बिक्री से कुल आय ₹0 61,200 /-

इस वर्ष स्थापित किये गये वाटर हीटर का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

तालिका 5

संस्थान	स्थान	सोलर वाटर हीटर की क्षमता	संख्या
निजी आवास	सुयालबाड़ी नैनीताल	200 ली०	1

(ब) सोलर ड्रायर :-

इस वर्ष हम सोलर ड्रायर की कार्यक्षमता बढ़ाने के साथ-साथ इसको आकार में छोटा करने एवं कम कीमत में उपलब्ध कराने में सफल हुए। इस वर्ष नये एवं सुधरे हुए डिजाईन के दो सोलर ड्रायर निर्मित किये गये। इन ड्रायरों की स्थापना त्रिपुरादेवी केन्द्र में रंगाई सामग्री एवं अर्गेनिक मसालों को **सुखाने** हेतु की गई है। एक सोलर ड्रायर वन विभाग कार्यालय मुनस्यारी को बिक्री किया गया।

सोलर ड्रायर की बिक्री से आय ₹0 14,000 /-

2.3 मैकेनिकल कार्यशाला

विगत वर्ष मैकेनिकल कार्यशाला फैब्रिकेशन कार्य में व्यस्त रही। विश्व के विभिन्न भागों से अवनी में आने वाले विद्यार्थियों एवं स्वयंसेवकों से हमें काफी महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए। इस प्रक्रिया से कार्यशाला में कार्यरत टीम को नई चीजें सीखने हेतु नया उत्साह एवं ऊर्जा प्राप्त हुई। वर्ष 2008-09 में कार्यशाला में उत्पादन का विवरण तालिका 6 एवं 7 में दिया गया है।

तालिका 6

सोलर वाटर हीटर हेतु निर्मित पार्ट	कुल
सोलर वाटर हीटर स्टैंड	1
आटोकट स्टैंड	1
इंसुलेटिड टैंक	2
कलक्टर पैनल	1
हीट एक्सचेंज कॉयल टैंक	2
हीट एक्सचेंज कॉयल	1
कुल	8

तालिका 7

अन्य सामग्री	कुल
स्लाईडर	1
निर्धूम चूल्हा	1
साइन बोर्ड	4
सोलर पैनल स्टैंड	1
अलमारी दरवाजा	4
सोलर ड्रायर	2
बंक बैड	2
पाईन नीडल बाइंडर	1
पाईन नीडल कटर ब्लेड	2
निर्धूम चूल्हा	1
टैंक कवर	3
टेबल	1
बुखारी	2
ब्रिकेट मशीन	1
कुल	26

वर्ष के दौरान मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा हस्तशिल्प उत्पादों की फिनिशिंग के लिये कलैन्ड्रिंग मशीन के संचालन हेतु 118.2 घंटे की विद्युत आपूर्ति भी की गई तथा ₹0 14,190 की आय अर्जित की गई। इसमें से ₹0 8,950 की आय पाईन नीडल गैसीफायर [पिरुल से बिजली] द्वारा उत्पादित ऊर्जा से की गई।

तालिका 8

मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा अर्जित आय	
फैब्रिकेशन	27,663
सोलर ड्रायर बिक्री	14,000
सोलर वाटर हीटर की बिक्री एवं स्थापना	61,200
अन्य आय	17,180
कलैन्ड्रिंग से आय	14,190
सर्विस चार्ज	5,960
कुल	1,40,193

(अ) शोध एवं विकास :-

उपयुक्त तकनीकी के विकास के साथ अपना कार्य जारी रखते हुए हमारे द्वारा चीड़ की पत्ती (पिरुल) की विध्वंसात्मक ऊर्जा को रचनात्मक ऊर्जा में परिवर्तित करने की दिशा में कुछ और शोध एवं विकास किये गये।

➤ पाईन नीडल बाइंडर

इस वर्ष हमने पाईन नीडल बाइंडर बनाने में सफलता प्राप्त की है। इस बाइंडर का प्रयोग चेक डैम बनाने हेतु किया जा सकता है जिससे भूकटाव को रोकने में निश्चित मदद मिलेगी। इस बाइंडर को विकसित करने का विचार मुनस्यारी प्रभाग के वन क्षेत्राधिकारी श्री एस. के. काला से प्राप्त किया गया। निर्मित बाइंडर की बिक्री वन विभाग को की गई।

बाइंडर की बिक्री से आय ₹0 5,700

➤ ब्रिकेट मशीन

पाईन नीडल गैसीफायर (पिरुल से बिजली) का कार्य विगत तीन वर्षों से जारी है। बिजली निर्माण के दौरान गैसीफायर से निकलने वाले राख को प्रयोग में लाने हेतु हमने ब्रिकेट मशीन

का निर्माण किया है जिसकी सहायता से इस राख को गोबर के साथ मिलाकर ब्रिकेट निर्मित किये जा सकते हैं। इस तकनीकी को विकसित करने में मासाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नालांजी, संयुक्त राज्य अमेरिका से मान्यता प्राप्त संस्थान डिजाईन लैब के विद्यार्थियों की सहायता प्राप्त की गई है।

➤ निर्धूम चूल्हा

ब्रिकेट मशीन की सहायता से निर्मित ब्रिकेटों का प्रयोग अधिक कुशलता से करने हेतु हमने निर्धूम चूल्हे का भी विकास किया है। इस चूल्हे को इस तरह से निर्मित किया गया है कि इसका प्रयोग खाना पकाने, पानी गर्म करने एवं कमरा गर्म करने हेतु किया जा सकता है। इस चूल्हे के साथ एक इंसुलेटिड पानी के टैंक को जोड़ा गया है जिसमें एकत्रित पानी खाना पकाने के दौरान गर्म होता है तथा कमरे को भी गर्म रखता है।

निर्धूम चूल्हे की बिक्री से आय 5,200

2.4 पाईन नीडल गैसीफायर (पिरुल से बिजली निर्माण)

चीड़ की पत्ती के गैसिफिकेशन से प्राप्त बिजली से हम वैल्विंग एवं कलैंडरिंग मशीन को चलाने में आने वाले खर्च को कम करने में सफल हुए हैं। गैसीफायर से प्राप्त बिजली का खर्च ₹0 40 प्रतिघंटा एवं डीजल जनरेटर का खर्च ₹0 74 प्रतिघंटा है। विगत 3 वर्षों में डीजल की खपत में इसी अनुपात में कमी हुई है।

तालिका 9

वर्ष	डीजल जनरेटर		गैसीफायर	
	डीजल की खपत	कार्य अवधि	पिरुल की खपत	कार्य अवधि
2006-07	1022 ली0	581.48 घंटे	920 किग्रा	57.6 घंटे
2007-08	378 ली0	167.9 घंटे	700 कग्रा	78.17 घंटे
2008-09	280 ली0	129.08 घंटे	2370 किग्रा	181.75 घंटे

जनपद अल्मोड़ा के दो गाँवों में पाईन नीडल गैसीफायर के माध्यम से रसोई गैस उपलब्ध कराने का कार्यक्रम एक और कदम आगे बढ़ गया है। इन गाँवों में ट्वेंट विश्वविद्यालय, नीदरलैंड के विद्यार्थी की मदद से पूर्ण कर लिया गया है।

गैसीफायर की स्थापना हेतु अंकुर साईटफिक के साथ चर्चा जारी है। इस कार्य में सहयोग हेतु वन विभाग एवं अक्षय ऊर्जा मंत्रालय के साथ चर्चा जारी है। इस परियोजना के कार्यरूप में आने हेतु अभी और एक साल का वक्त लगने की संभावना है।

चीड़ पत्ती कटर मशीन में सुधार :-

इस वर्ष के दौरान हमने उत्पादकता बढ़ाने एवं ऊर्जा की खपत कम करने हेतु चीड़ पत्ती कटर मशीन के डिजाईन में सुधार किया है। दिल्ली के श्री अमर सेठ एवं अमेरिका के मैकेनिकल इंजीनियर श्री जौनाथन की सहायता से कटर मशीन में निम्नलिखित सुधार किये गये।

- मोटर की आरपीएम कम की गई जिसके परिणामस्वरूप ऊर्जा की खपत पूर्व की तुलना में एक चौथाई हो गई।
- कटिंग हेतु चौड़े ब्लेडों के प्रयोग एवं ब्लेडों के बीच दूरी कम करने से प्रति घंटा उत्पादकता में 4.5 किग्रा की वृद्धि हुई। वर्तमान में इस मशीन की सहायता से 12.5 किग्रा प्रति घंटे की दर से कटिंग की जा रही है जोकि गैसीफायर के प्रतिघंटा खपत के अनुरूप है।

मासाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, संयुक्त राज्य अमेरिका से मान्यता प्राप्त संस्थान डिजाइन लैब के विद्यार्थियों की सहायता से कटर मशीन का एक नया मॉडल भी विकसित किया गया। इस मॉडल में और अधिक सुधार हेतु इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों द्वारा अपने साथ ले जाया गया है।

2.5 बायोगैस :-

इस वर्ष के दौरान ग्राम ब्याती में 2 क्यूबिक मी० का एक बायोगैस प्लांट स्थापित किया गया। हमारे प्रयासों के बावजूद भी हम अधिक परिवारों तक इस कार्यक्रम को नहीं पहुँचा पाये हैं।

3. नये डिजाईनों के विकास से परम्परागत हस्तशिल्प का संरक्षण एवं हस्तनिर्मित प्राकृतिक रंगों के उत्पाद :-

अवनी विगत 8 वर्षों से परंपरागत हस्तशिल्प के विकास एवं संरक्षण हेतु कार्यरत है। विभिन्न गाँवों में स्थापित 6 विकेन्द्रीकृत उत्पादन केन्द्रों के माध्यम से हम 43 गाँवों में कताई बुनाई कार्य से संबंधित कार्यक्रमों का समन्वय एवं संचालन कर रहे हैं। यह कार्यक्रम अब आत्मनिर्भर ग्रामीण उद्यम के रूप में स्थापित हो गया है तथा परंपरागत एवं नये प्रशिक्षित कारीगरों को पूरक एवं वैकल्पिक आय उपार्जन के अवसर उपलब्ध करा रहा है।

विगत वर्ष के दौरान 43 गाँवों एवं तोकों के 308 कारीगरों एवं रंगाई सामग्री संग्रहणकर्ताओं द्वारा इस कार्यक्रम में सहभागिता की गई। इन लाभार्थियों में 92.55 प्रतिशत महिलाएँ हैं। कार्यक्रम में शामिल 43 गाँवों में से हम 20 गाँवों में सघन रूप से कार्य कर रहे हैं तथा अन्य 23 गाँवों में व्यक्तिगत रूप से कारीगरों के साथ कार्य कर रहे हैं।

हमारे कार्यक्रम से अधिकांश रूप से बोरा कुथलिया समुदाय की परंपरागत महिला कारीगर लाभान्वित हुई हैं। हम अन्य समुदायों के गरीब एवं पिछड़े वर्ग को भी कताई एवं बुनाई की कला स्थानांतरित करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं ताकि रोजगार अवसरों के सृजन के साथ-साथ परंपरागत हस्तकला का संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार भी किया जा सके।

ग्रामीण स्तर पर आजीविका के अधिकाधिक अवसरों के सृजन हेतु प्लेटफार्म उपलब्ध कराने के लिये 4 गाँवों के 4 ग्रामीणों द्वारा ग्रामीण उत्पादक केन्द्रों की स्थापना हेतु अवनी को जमीन दान दी गई है। इनमें से तीन गाँवों में तीन ग्रामीण उत्पादन केन्द्रों की स्थापना हेतु भवन निर्माण किया जा चुका है तथा वर्तमान में ग्राम चनकाना में भवन निर्माण का कार्य प्रगति में है। इस भवन के निर्माण में अधिकांश रूप से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री जैसे मिट्टी एवं लकड़ी का प्रयोग किया जा रहा है। इस भवन का संपूर्ण ढाँचा मिट्टी के ब्लांक से बनाया जायेगा। इस तकनीक के प्रदर्शन से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध निर्माण सामग्री के प्रयोग हेतु नये आयाम खुलेंगे।

राजनैतिक कारणों से कुमाऊँ से होकर जाने वाले भारत एवं तिब्बत के बीच व्यापार के रास्ते पुनः बंद होने से कच्चे माल जैसे, तिब्बतन ऊन एवं पश्मीना की उपलब्धता बाधित हुई है। परिणामस्वरूप हम कतकरों को पर्याप्त तिब्बतन ऊन कताई हेतु उपलब्ध नहीं करा पाये। इस परिवर्तन से हमारे द्वारा तिब्बतन ऊन के उत्पादों हेतु खोजा गया बाजार भी प्रभावित होने की आशंका है।

तिब्बती ऊन की उपलब्धता नहीं होने से हमने परंपरागत ऊनी कतकरों को रेशम की कताई हेतु प्रशिक्षित करने की दिशा में अपने प्रयासों को केन्द्रित किया है। स्थानीय स्तर पर कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु हम रेशम की खेती के कार्य को भी मजबूती से आगे बढ़ा रहे हैं।

हस्तशिल्प उत्पादों की प्राकृतिक रंगाई, प्राकृतिक पेंटिंग रंगों एवं रंग द्रव्य के प्रयोग से रंगाई सामग्री के संग्रहण में महिला समूहों की सहभागिता सुनिश्चित हुई है। हम प्राकृतिक रंगाई हेतु उस सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं जिसका अन्य कोई प्रयोग नहीं है तथा जिसे निष्प्रयोज्य समझकर फेंक दिया जाता है। इनमें प्रमुख हैं दाढ़िम छिलका एवं अखरोट गाल आदि। हम महिला समूहों को अन्य सामग्री जैसे रीठे के पाऊंडर की बिक्री हेतु भी सहायता प्रदान कर रहे हैं। इस कार्यक्रम से आय उपार्जन स्रोतों की उपलब्धता के साथ-साथ स्थानीय प्रजाति के पौधों जैसे हरड़ा, अखरोट, दाढ़िम रीठा आदि के रोपण एवं संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा।

इस वर्ष कुल मिलाकर ₹0 10,33,181 की धनराशि मजदूरी के रूप में इस कार्यक्रम के माध्यम से सृजित की गई। इस मजदूरी में 308 कारीगरों की मजदूरी के अलावा अन्य कार्य जैसे, प्राकृतिक रंगाई, सिलाई एवं बुनाई सहयोग में संलग्न कारीगरों का मेहनतनामा भी शामिल है जो कि आस पास के गाँवों के निवासी हैं।

यूनेस्को सील ऑफ एक्सलेंस हेतु इस वर्ष हमारे उत्पादों का चयन नहीं हो पाया। लेकिन निर्णायक कमेटी द्वारा हाथ की बुनाई के परंपरागत कौशल को काफी सराहा गया।

कताई बुनाई से संबंधित गाँवों का विवरण तालिका 10 में दिया गया है।

तालिका 10

केन्द्र का नाम एवं संबंधित गाँव						
क्र० सं०	धरमघर जिला बागेश्वर	दिगोली जिला बागेश्वर	त्रिपुरादेवी जिला पिथौरागढ़	चनकाना जिला पिथौरागढ़	सुकना जिला पिथौरागढ़	गढ़तिर जिला पिथौरागढ़
1	सिमगढ़ी	मांणा	महरौड़ी	चनकाना	सुकना	गढ़तिर
2	सौक्यूड़ा	दिगोली	भंडारी गाँव	मूनी	घाँगल	भनेलगाँव
3	धूरा	धौलानी	राईआगर	गोदा	धौलानी	पुरिंग
4	धरमघर	मटकोली	बना	पुंगरखोली	राममंदिर	पटोली
5	थुमा	नायल	त्रिपुरादेवी	—	—	—
6	कराला	ठाँगा	मुँगराऊँ	—	—	—
7	दसौली	औलानी	मानीपुर	—	—	—
8	दराती, मुनस्थारी	सिमायल	हस्यूडी	—	—	—
9	—	कालीगाढ़	बोराखेत	—	—	—
10	—	ढानण	बेरीनाग	—	—	—
11	—	पैठाँड़	—	—	—	—
12	—	धुरा	—	—	—	—
13	—	तलाड़ा	—	—	—	—

कारिगर कौशल	2006—07	2007—08	2008—09
कतकर	197	211	132
बुनकर	51	45	48
निटर	18	12	20
टेलर	5	7	6
पश्मीना छँटाईकर्ता	2	0	0

प्राकृतिक रंगाई कर्मी	6	6	5
निटर एवं कतकर	34	2	0
निटर एवं बुनकर	8	0	0
बुनकर एवं कतकर	1	5	0
बुनकर कतकर एवं निटर	0	0	0
पश्मीना छँटाईकर्ता एवं निटर	2	0	0
पश्मीना छँटाईकर्ता एवं कतकर	0	0	0
कतकर एवं रंगाई सामग्री संग्राहक	18	16	27
बुनकर निटर एवं रंगाई सामग्री संग्राहक	5	0	0
कतकर निटर एवं रंगाई सामग्री संग्राहक	5	0	0
फिनिशिंग कारीगर			8
बुनकर सहायक कारीगर			3
कुल परंपरागत एवं प्रशिक्षित कारीगर	352	304	249
प्रशिक्षणार्थी	10	20	3
वोकेशनल ट्रेनीज			8
रंगाई सामग्री संग्राहक	26	21	49
कुल लाभान्वित सं०	388	345	309
कुल गॉव सं०	46	39	43
कुल उपार्जित आय (मजदूरी एवं मानदेय)	रु० 5,01,017	रु० 5,17,045	रु० 10,33,181 (कार्य में सहायक सहयोगी कारीगरों का वेतन भी शामिल)
कुल बिक्री (अवनी)	रु० 23,46,153	रु० 27,64,590	रु० 26,18,836
कुल बिक्री (कुमाऊँ अर्थकापट स्वायत्त सहकारिता)			13,53,120 (अवनी की ओर से अर्थकापट द्वारा निर्यात)

कारिगरों का समूह कुमाऊँ अर्थकापट स्वायत्त सहकारिता मजबूती से आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में सहकारिता की शेयरधारक संख्या 75 है। इस वर्ष के दौरान सहकारिता कुमाऊँ हैंडलूम एवं हैंडीक्राफ्ट के नाम से जिला उद्योग केन्द्र में पंजीकृत हो गई है। इस वर्ष सहकारिता के निदेशक मंडल द्वारा निदेशक मंडल के अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष पद पर नये सदस्यों का चुनाव किया गया। सुश्री दीपा भौरियाल को अध्यक्ष एवं सुश्री दीपा बोरा को कोषाध्यक्ष पर पर चयनित किया गया।

कुमाऊँ अर्थकापट सहकारिता के संगम अनुच्छेद में संशोधन किया गया। संगम अनुच्छेद में धारा 36(अ) एवं धारा 36(ब) को समाहित किया गया जिसके तहत सहकारिता को अपने व्यावसायिक एवं तकनीकी पहलुओं के प्रबंधन हेतु दिशा निर्देशन के लिये संरक्षक नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

वर्तमान में सहकारिता अवनी की तरफ से समस्त निर्यात का कार्य संभालने के साथ-साथ हाथ के कते तागे का उत्पादन का कार्य भी देख रही है।

इस वर्ष के दौरान सहकारिता द्वारा 122.510 किग्रा रेशम की कताई की गई, जिसके माध्यम से कतकरों द्वारा मेहनतनामे के रूप में ₹0 76,459 की आय उपार्जित की गई। कुमाऊँ अर्थकाफ्ट सहकारिता द्वारा कुल मिलाकर ₹0 13,53,120 की बिक्री की गई। इसमें से ₹0 12,84,558 मू0 के तैयार उत्पादों की बिक्री की गई तथा ₹0 68,562 मू0 का तागा बिक्री किया गया।

समुदाय के आधार पर कारीगरों का विवरण तालिका 12 में दिया गया है।

तालिका 12

	महिला	पुरुष	कुल
भोटिया (अनुसूचित जनजाति)	9	0	9
बोरा कुथलिया (अन्य पिछड़ा जाति)	184	16	200
अनुसूचित जाति	42	3	45
सामान्य	51	4	55
कुल	286	23	309

उत्पादन का विवरण तालिका 13 एवं 14 में दिया गया है।

तालिका 13

उत्पाद एवं कच्चा माल विवरण	उत्पादन 2006—2007	उत्पादन 2007—08	उत्पादन 2008—09
शाल	165	445	255
ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम			
स्टोल	523	941	815
ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम			
मफलर	750	843	502
पश्मीना, ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम			
कपड़ा	629 मी0	293.23	763.46 मी0
ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम			
पोचो	69	15	—
लूम पर तैयार केप	—	—	—
साड़ी (5.5 मी)	6	15	3
जैकेट बच्चों के एवं बड़े	332	142	141
तिब्बतन ऊन, मैरिनो एवं सिल्क			
एवं ऊन,			
सिलाई से तैयार केप	36	—	—
स्वेटर एवं टोपी	3	64	32
जुराब	—	17 जोड़ी	—
निटिड खिलौने			50
नेक वार्मर			10
आर्म वार्मर			2
दरी	13	5	—
थुलमा एवं चुटका	45	67	64
स्कार्फ	48	—	—

कुशन कवर	25	73	34
आसन	64	8	13
टी कोजी	42	53	—
नमदा	6	—	—
बैड स्प्रेड	3	—	—
टाप्स	—	8	—
कुर्ता	—	5	—
पैट	—	2	—
कैफीशान	—	16	5
लंबा कोट	—	13	3
बोलेरो	—	1	15
फिरन	—	—	1
तिब्बती ऊनी कंबल	—	3	—
काटन ऊन चुटका सैंपल	—	—	13
दन	—	—	1

तालिका 14

कताई	
विवरण	मात्रा
कता ऊन	413.31
कता रेशम	122.51
कता पश्मीना	0
कुल	535.82

3.1 क्षमता विकास :-

उत्पादक सहकारिता के संचालन हेतु सक्षम मानव संसाधन विकसित करने की दिशा में कार्य करते हुए हमने विगत वर्ष सुपरवाईजरी टीम के लिये निरंतर प्रशिक्षण आयोजित किये हैं।

इस वर्ष तीन प्रशिक्षणार्थियों को प्रबंधक के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है। इनमें से एक को पूर्व में ही सुकना केन्द्र में नियुक्त किया जा चुका है अन्य दो को सुकना एवं धरमघर में नियुक्त किया जायेगा।

सुकना केन्द्र के पूर्व सुपरवाईजर को केन्द्रीय सुपरवाईजर के रूप में प्रोन्नत किया गया है। वर्तमान में उसे अपने कार्य में ज्यादा सक्षम बनाने हेतु कम्प्यूटर संचालन हेतु प्रशिक्षित किया जा रहा है। उसके द्वारा मासिक रूप से फील्ड सेंट्रों का भ्रमण किया जाता है तथा स्टॉक मिलान, वाऊचर निर्माण एवं मजदूरी गणना के साथ – साथ नये प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण में भी सहायता प्रदान की जा रही है।

विगत वर्ष फील्ड सेंट्रों में स्थापित किये गये कम्प्यूटरों में से ग्राम सुकना एवं ग्राम दिगोली में स्थापित कम्प्यूटर पूर्ण रूप से कार्यरत हैं। धरमघर केन्द्र में पावर प्लांट में आई खराबी के कारण कम्प्यूटर प्रशिक्षण आयोजित नहीं किया जा सका है। दिगोली एवं सुकना केन्द्र में सुपरवाईजर कम्प्यूटर पर कार्य करने में सक्षम हो गये हैं। माह अप्रैल 2009 से इन केन्द्रों के सुपरवाईजर मासिक रिपोर्ट कम्प्यूटर से तैयार करेंगे।

विगत 2 वर्षों में स्थापित किये गये व्यवस्थित ढाँचे के परिणामस्वरूप वर्तमान में दस्तावेजीकरण, सूचना प्रबंधन एवं स्टॉक प्रबंधन कार्य की गुणवत्ता में काफी सुधार आया है। वर्तमान में यह व्यवस्था कुशलतापूर्वक कार्य कर रही है।

प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 15, 16 एवं 17 में दिया गया है।

तालिका 15

कौशल विकास

क्रम सं०	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	प्रशिक्षक
1	कंप्यूटर प्रशिक्षण	6-09-08 से 31-03-09	फील्ड सेंटर दिगोली	गोविंद सिंह ललिता बोरा हीरा सिंह मनोज सिंह हरीश पंत	रेनू बोरा
2	कंप्यूटर प्रशिक्षण	1-08-08 से 30-11-08	फील्ड सेंटर सुकना	हरीश टम्टा जगदीश सिंह	गोकुल सिंह
3	स्टॉक प्रशिक्षण	17-02 -09 से जारी	फील्ड सेंटर धरमघर	नरेन्द्र सिंह	कमला राठौर
4	बुनाई सुपरविजन	8-08-08 से 31-12-08	सुकना केन्द्र	जगदीश बोरा	हरीश टम्टा

तालिका 16

मुद्दा आधारित प्रशिक्षण

क्रम सं०	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	प्रशिक्षणार्थी
1	स्वास्थ्य सुरक्षा	10-04-08	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	अवनी टीम	डॉ एस श्रीनिवासन, इंद्रप्रस्थ अपोलो क्लिनिक, नई दिल्ली
2	स्वास्थ्य सुरक्षा		चनकाना फील्ड सेंटर एवं अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	ग्राम चनकाना के ग्रामीण एवं अवनी स्टाफ	डॉ रेनू बैंगलौर
3	व्यक्तिगत विकास	25-12-08	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	अवनी स्टाफ के 18 सदस्य	राजेन्द्र जोशी, जगदीश धपोला एवं ललिता पंचपाल

तालिका 17

क्रम सं०	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	प्रशिक्षक
1	वोकेशनल ट्रेनिंग	1-4-2008 से 31-3-2009	दिगोली केन्द्र	दीपा बोरा तारा बोरा	ललिता बोरा हरीश पंत
2	वोकेशनल ट्रेनिंग	1-4-2008 से 31-3-2009	धरमघर केन्द्र	तारा महारा दीपा आर्या तारा आर्या	
3	बुनाई	माह जुलाई 2008 से जारी	त्रिपुरादेवी केन्द्र	गीता, किरन एवं नंदी	संतोषी धपोला
4	बुनाई	25-07-2008 से	सुकना केन्द्र	शांति बोरा	जगदीश बोरा

		31-01-09		सुनीता बोरा सुशीला बोरा चंपा बोरा	एवं हरीश टम्टा
5	बुनाई	1-01-09 से जारी	सुकना केन्द्र	सरस्वती देवी	जगदीश बोरा
6	वेस्ट मैनेजमेंट एवं कताई	11-01-09 से 23-03-09	त्रिपुरादेवी केन्द्र	बबीता एवं रीता	सुश्री रश्मि, राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान अहमदाबाद
7	खिलौने निर्माण	3-01-09 से 5-01-09	त्रिपुरादेवी केन्द्र	ग्राम दिगोली, मुंगराऊँ एवं बेरीनाग के 12 प्रतिभागी	सुश्री कौसर राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान अहमदाबाद
8	बटन निर्माण	6-01-01 से 7-01-09	त्रिपुरादेवी केन्द्र	संतोषी, बबीता, गोविंदी एवं हंसा	सुश्री रश्मि, राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान अहमदाबाद
9	फिनिशिंग	17-05-08 से 31-10-08	त्रिपुरादेवी केन्द्र	प्रभा उपरेती	संतोषी धपोला
10	रेशम कताई	नवंबर 08 से जारी	सुकना दिगोली एवं चनकाना केन्द्र	गोंवों के परंपरागत ऊनी कतकर	आन सिंह हरीश पंत जगदीश बोरा कमला बोरा
11	सिलाई	6-08-09 से 6-10-09	त्रिपुरादेवी केन्द्र	रेखा आगरी	शोभा आर्या

3.2 उत्पाद डिजाईन :-

अवनी द्वारा नई सामग्री एवं नये डिजाईनों का प्रयोग करते हुए उत्पाद बनाने का कार्य जारी रखा गया है। अवनी द्वारा स्वयं डिजाईन विकसित करने का कार्य निरंतर जारी रखा गया है। इसके अलावा विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों जैसे, राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान अहमदाबाद एवं विश्व के विभिन्न भागों से आने वाले स्वयंसेवियों द्वारा अवनी में आकर सेवाएँ प्रदान की गई हैं।

इस वर्ष के दौरान राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान अहमदाबाद के तीन विद्यार्थियों द्वारा नये डिजाईन तैयार किये गये।

- सुश्री नेहा लाड द्वारा परंपरागत तकनीकी का प्रयोग करते हुए तिब्बती भेड़ के ऊन से कम वजन के कंबलों की एक श्रृंखला विकसित की गई।
- सुश्री कौसर द्वारा तिब्बती ऊन एवं मैरिनो ऊन का प्रयोग करते हुए निटिड खिलौने, टोपी, मफलर एवं नैक वार्मर तैयार किये गये।
- सुश्री रश्मि शंकर द्वारा स्टोल एवं मफलर में नये डिजाईनों का प्रयोग किया गया।

- इंग्लैंड से आई स्वयंसेवक सुश्री जैसिका द्वारा पाजेब एवं कंगन में ईकट डिजाइन का प्रयोग किया गया। सुश्री जैसिका द्वारा कुछ शाल एवं स्टोल में भी ईकट डिजाइन का प्रयोग किया गया।

निष्प्रयोज्य कच्चे माल का पुनः प्रयोग—

विगत चार वर्षों से हम अपने निष्प्रयोज्य कच्चे माल के प्रयोग से नये उत्पाद तैयार कर रहे हैं। इस वर्ष निष्प्रयोज्य के प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया गया। निष्प्रयोज्य कच्चे माल के प्रबंधन हेतु एक प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है जो विभिन्न फील्ड सेंटरों से प्राप्त निष्प्रयोज्य का प्रबंधन कर रहा है। विभिन्न सेंटरों से प्राप्त निष्प्रयोज्य को रंग एवं सामग्री के आधार पर अलग-अलग करके उसकी कटाई एवं बुनाई की जा रही है।

3.3 मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग :-

हम निर्यात बाजार में अपनी पहुँच का निरंतर विस्तार कर रहे हैं।

- इस वर्ष हमने अधिकांश रूप से आर्डर पर कार्य किया। केवल दो प्रदर्शनियों में सहभागिता की गई।
- हमने कुछ खुदरा स्टोरों से भी अपने उत्पादों की बिक्री की है।
- इस वर्ष कुल मिलाकर ₹0 26,18,836 की बिक्री की गई।
- अवनी को इटली के शहर तौरिनो में आयोजित बुनाई एवं कटाई मेले में सहभागिता हेतु आमंत्रित किया गया। इस मेले में यूरोप के अनेक कारीगरों से हमारा संपर्क हुआ। मेले के दौरान हमने अपने उत्पादों की अच्छी बिक्री भी की।
- अवनी के उत्पादों की बिक्री एवं कार्य के प्रस्तुतीकरण हेतु सुश्री एलीट कूस्टन, सुश्री कैथरीन कौनफिनो एवं सुश्री कीटो थामजरी के सहयोग से दक्षिणी फ्रांस के शहर में विशेष आयोजन किया गया। इसके प्रति काफी सकारात्मक अनुकिया रही जिससे हमारा उत्साहवर्द्धन हुआ।
- सत्य ज्योति ट्रस्ट नई दिल्ली के माध्यम से हमारे उत्पादों को पेरिस में आयोजित एथिकल शो में प्रदर्शित किया गया। सत्य ज्योति ट्रस्ट अवनी द्वारा उत्पादित फैब्रिक से उच्चकोटि के फैशन परिधान निर्मित करता है।
- स्विटजरलैंड में बाजार संबंधी संभावनाओं की खोज के लिये इस वर्ष संपर्क स्थापित किये गये हैं। आगामी वर्ष में सुश्री फ्रैकोइस हिरली के सहयोग से अवनी उत्पादों की बिक्री एवं कार्य के प्रस्तुतीकरण हेतु बर्न शहर में समारोह आयोजन करने की कार्ययोजना तैयार की गई है।
- अवनी को 31 जनवरी 2012 तक सिल्क मार्क का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है।
- हमने आल इंडिया आर्टिजन एवं काफ्टवर्कर एसोशियेशन नई दिल्ली से हस्तशिल्प एवं प्राकृतिक रंगाई का प्रमाणपत्र अगले दो वर्षों हेतु नवीनीकृत कर लिया है।

प्रदर्शनियों एवं खुदरा स्टोरों का विवरण तालिका 18 में दिया गया है।

तालिका 18

प्रदर्शनियों में सहभागिता	निर्यात खरीददार	रिटेल स्टोर
नेचर बाजार, दिल्ली हाट		पीपल ट्री दिल्ली
कान्सर्न इंडिया मुम्बई	फ्रेडस ऑफ तिलोनिया संयुक्त राज्य अमेरिका	नेचर शॉप, आरोही
इटली	डोसा, संयुक्त राज्य अमेरिका	
सेंट मैमर्ट, फ्रांस	ली पासर, फ्रांस	

एथिकल फैशन शो, पेरिस	टैक्सचर, फ्रांस	
	टिकाऊ, फिनलैंड	

3.4 प्राकृतिक रंगाई :-

प्राकृतिक रंगाई हेतु स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पौधों पर आधारित रंगाई सामग्री के प्रयोग से उन पौधों के माध्यम से महिला समूहों हेतु आय उपार्जन के स्रोत सृजित हुए हैं जिन पौधों का और कोई प्रयोग नहीं है।

इस प्रक्रिया से इस प्रकार के पौधों के संरक्षण एवं पौधारोपण की पृवृत्ति बढ़ी है। इनमें प्रमुख हैं रीठा, हरड़ा, दाड़िम आदि। रंगाई सामग्री के संग्रहण में ग्रामीणों की सहभागिता बढ़ रही है।

महिला समूहों द्वारा रंगाई सामग्री के संग्रहण से कुल मिलाकर ₹0 41,691 की आय उपार्जित की गई।

हमने रंगाई द्रव्य के दोहन हेतु एक स्प्रे ड्रायर मशीन भी प्राप्त कर ली है। इस मशीन की सहायता से हम कपड़े एवं तागे की रंगाई एवं पेंटिंग रंग बनाने में सक्षम होंगे। रंगाई कार्यशाला में रंगे गये तागे का विवरण तालिका 19 में दिया गया है।

तालिका 19

प्राकृतिक रंगाई	
विवरण	मात्रा किग्रा
मैरिनो तागा	259.2
तिब्बतन ऊन तागा	402.5
रेशम (तसर, ईरी एवं मूंगा)	142.4
पशमीना	0
काटन	1.2
कुल कता तागा	805.3
मफलर	93
शाल	8
स्टोल एवं स्कार्फ	0
चुटका	32
थुल्मा	20
टोपी	13
कपड़ा	16.3 मी0

अ. शोध एवं विकास :-

हम अपनी रंगाई कार्यशाला को दस्तावेजीकरण, शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित करना चाहते हैं। हम देश के अन्य भागों के रंगाई कारीगरों के साथ अनुभवों का आदान – प्रदान एवं प्रशिक्षण में सहभागिता भी बढ़ाना चाहते हैं।

अवनी केन्द्र में रंगाई पौधों की खेती के साथ-साथ ग्रामीण किसानों के साथ भी आजीविका के स्रोत के रूप में भी रंगाई के पौधों की खेती करने की कार्ययोजना बना रहे हैं। रंगाई सामग्री के मूल्यवर्धन हेतु हमने रंग द्रव्य निकालने के लिए डाई एक्सट्रैक्शन सुविधा स्थापित कर ली है तथा इसे शीघ्र ही स्थापित किया जायेगा।

ब. पेंटिंग हेतु प्राकृतिक रंग :-

हमने पौधों पर आधारित प्राकृतिक रंगों की एक श्रृंखला का उत्पादन जारी रखा है जो कि गैर रासायनिक एवं बच्चों के प्रयोग हेतु पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। इन रंगों के निर्माण में हल्दी, हरड़ा, दाड़िम छिलका एवं अखरोट के छिलके का प्रयोग किया जा रहा है। इन सभी का उत्पादन एवं संग्रहण महिला समूहों द्वारा किया जा रहा है। इस प्रकार यह ग्रामीण स्तर पर आय उपाजन का भी माध्यम बन रहा है।

इस वर्ष हमने राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान अहमदाबाद के विद्यार्थियों की मदद से प्राकृतिक रंगों की पैकेजिंग का कार्य पूर्ण कर लिया है। इन रंगों की बिक्री हमने कान्सर्न इंडिया प्रदर्शनी मुंबई एवं नेचर बाजार दिल्ली में की है। इन रंगों के प्रति काफी सकारात्मक अनुकिया रही है तथा इन रंगों की थोक आपूर्ति के संदर्भ विभिन्न संस्थानों द्वारा जानकारी मांगी गई है।

इस वर्ष ₹0 7,365 मूल्य के प्राकृतिक रंग बिक्री किये गये।

स. प्राकृतिक कुमकुम :-

प्राकृतिक कुमकुम निर्माण इस क्षेत्र का काफी पुराना रिवाज है। कुमकुम का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों एवं शुभ अवसरों पर किया जाता है। परंपरागत विधि में हल्दी का प्रयोग कुमकुम बनाने में किया जाता था क्योंकि इसमें पर्याप्त औषधीय गुण विद्यमान हैं। दुर्भाग्यवश वर्तमान में परंपरागत कुमकुम के विकल्प के रूप में मरकरी युक्त रसायन का प्रयोग किया जा रहा है जो कि शरीर के लिए काफी नुकसानदायक है। हम महिला समूहों को कुमकुम निर्माण का प्रशिक्षण देकर इस परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। विगत वर्ष हमारे द्वारा कुल 22 किग्रा प्राकृतिक कुमकुम का निर्माण करके विभिन्न प्रदर्शनियों में इसकी बिक्री की गई। कुल मिलाकर ₹0 9,470 मूल्य का कुमकुम बिक्री किया गया।

कुमकुम निर्माण हेतु हमारे द्वारा ग्राम दिगोली में प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान कुल मिलाकर 2.5 किग्रा प्राकृतिक कुमकुम का निर्माण किया गया।

द. हस्तशिल्प प्रसंस्करण में उपयुक्त तकनीक

हम प्राकृतिक रंगाई तथा रेशम एवं ऊन की धुलाई में वर्षा के संग्रहीत जल का प्रयोग करते हैं। रंगाई हेतु 60°C तक पानी सोलर वाटर हीटर में गर्म किया जाता है जिससे कि ईंधन के संरक्षण में सहायता प्राप्त होती है। साबुन के स्थान पर रीठे के प्रयोग को प्राथमिकता दे रहे हैं तथा निष्प्रयोज्य जल को संशोधित करके सिंचाई हेतु प्रयोग किया जा रहा है।

4. महिला सशक्तीकरण :-

4.1 स्वयं सहायता समूह

4.1.1 लघु बचत

वर्तमान में अवनी 38 महिला स्वयंसहायता समूहों के साथ कार्य कर रही है। इस वर्ष ग्राम दिगोली में एक नये समूह का गठन किया गया। ग्राम सिमायल के समूह के कुछ सदस्यों द्वारा समूह से अपने पैसे की निकासी कर ली गई है, जिसके कारण इस धनराशि को हमने अपने रिकार्ड से हटा लिया है।

सभी समूहों द्वारा नियमित बचत की जा रही है तथा सदस्यों द्वारा आपस में ऋण का आदान प्रदान किया जा रहा है। इनमें से कुछ समूहों द्वारा एक अन्य संस्था हिमालयन ग्राम विकास

समिति द्वारा संचालित कार्यक्रम आजीविका परियोजना से भी लाभ प्राप्त किया जा रहा है। ग्राम चन्तोला, सिमायल एवं औलानी समूह द्वारा इस परियोजना के माध्यम से ₹0 9,000 की नकद धनराशि प्राप्त की गई है। महिला समूहों की बचत एवं ऋण का विवरण तालिका 20 एवं 21 में दिया गया है।

तालिका 20

क्रम सं०	समूह का नाम	सदस्य सं.	आयोजित बैठक	उपस्थित सदस्य	31 मार्च 2008 तक जमा	वर्ष 2008-09 में जमा	कुल जमा	विगत वर्ष दिया गया ऋण	वर्ष 08-09 में दिया गया ऋण	वापस ऋण
1	लमजिंगड़ा	16	10	104	35,396	5,144	40,540	12,000	8,000	18,500
2	चन्तोला	10	10	31	14,019	2,523	16,542	0	4,000	0
3	सिमायल	17	9	97	8,258	8,946	17,204	2000	0	0
4	माणा	12	10	92	30,856	9,261	40,117	23,000	0	5,000
5	धौलानी	17	8	91	16,515	4,937	21,452	5,000	7,000	7,000
6	महरौड़ी	14	10	80	14,072	4,045	18,117	4,000	1,0000	2,000
7	सिमगढ़ी	12	10	91	11,122	2,777	13,899	0	2,000	5,000
8	त्रिपुरादेवी	15	12	120	22,115	8,116	30,231	3,500	11,000	9,700
9	दिगोली	18	11	154	20,631	4,820	25,451	0	25,000	10,000
10	मटकोली	9	10	68	6,515	1,388	7903	0	0	0
11	धरमघर	6	11	94	6,218	884	7102	0	4,000	0
12	बेरीनाग	23	8	71	31,155	8,536	39,691	0	0	23,000
13	चनकाना	9	9	87	7,112	3,972	11,084	0	0	0
14	ठाँगा	13	8	73	25,756	4,364	30,120	8,000	0	0
15	सुकना	10	11	87	21,203	2,980	24,183	5,000	0	0
16	सिलिंगियाँ	15	9	78	6,102	3,789	9,891	0	5,500	0
17	गढ़तिर	9	10	56	2,170	970	3,140	0	0	0
18	मूंगराऊँ	21	10	89	8,835	3,625	12,460	0	0	0
19	हस्पूड़ी	8	8	52	3,180	1,858	5,038	0	1,000	0
20	रावलगाँव	16	11	137	7,449	4,109	11,558	0	0	0
21	बना बैड	17	5	24	5,403	503	5,906	0	0	0
22	सेरा पहर	9	12	95	3,560	2,293	5,853	0	0	0
23	बना	12	11	107	4,260	3,039	7,299	0	0	0
24	सेला	14	11	114	5,580	3,581	9,161	0	0	0
25	कन्यूरपानी	10	11	97	3,560	2,601	6,161	0	0	0
26	ज्यूला	15	10	107	5,106	3,977	9,083	0	0	0
27	बानड़ी	8	10	66	2,370	1,475	3,845	0	0	0
28	औलानी	12	11	101	3,540	8,160	11,700	0	0	0
29	पिपली	15	11	136	4,460	3,737	8,197	0	0	0
30	ज्योति समूह बल्टा	11	0	0	2,663	0	2,663	0	0	0
31	प्रगतिशील समूह, बल्टा	11	0	0	1,624	0	1,624	0	0	0
32	चाख	14	11	116	2,140	3,418	5,558	0	2,200	0
33	बास्ती	9	10	67	1,740	5,644	7,384	0	0	0
34	दुदिला	23	10	147	1,740	5,630	7,370	0	0	0
35	ओखराड़ी	12	10	114	840	2,953	3,793	0	0	0
36	एराड़ी	17	10	129	1,020	3,601	4,621	0	0	0
37	जखेड़ी	12	12	129	720	2,816	3,536	0	0	0

38	दिगोली	20	8	69	0	22,000	22,000	0	12,000	0
	कुल	511	358	3370	3,49,005	1,62,472	5,11,477	62,500	91,700	80,200

तालिका 21

	2006—2007	2007—2008	2008—09
कुल समूह	29	37	38
कुल सदस्य	403	499	511
कुल आयोजित बैठकें	156	339	358
उपस्थित महिलाएँ	1555	3358	3370
वर्ष में कुल जमा	रु0 75,922	रु0 1,16,517	रु0 1,62,472
समूहों की कुल बचत	रु0 2,43,131	रु0 3,56,707	रु0 5,11,477
दिया गया ऋण	रु0 88,500	रु0 61000	रु0 91,700
ऋण वापसी	रु0 32,100	रु0 46360	रु0 80,200
पिछले 3 वर्षों में दिया गया कुल ऋण	रु01,52,770	रु0 1,95,770	रु0 2,41,200

4.1.2 महिला समूहों के साथ आय उपार्जक कार्यक्रम :-

स्वयंसहायता समूह सदस्यों के साथ आय उपार्जक कार्यक्रम जारी हैं। इस वर्ष स्वयंसहायता समूह सदस्यों एवं अवनी टीम के साथ प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन भ्रमण आयोजित किये गये। प्रशिक्षणों एवं प्रदर्शन भ्रमणों का विवरण तालिका 22 में दिया गया है।

तालिका 22

क सं०	प्रशिक्षण विषय	स्थान	सहभागी समूह	अवधि	संदर्भ व्यक्ति	सहभागी सं०
1	मधुमक्खी पालन	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	अवनी कार्यकर्ता	11-5-08 से 13-05-08	श्री लियो एवं श्री मूर्ति, कीस्टोन फाउण्डेशन तमिलनाडु	8
2	मुर्गीपालन	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	ग्राम चन्तोला, वर्षायत, बेलकोट, ब्याती, स्यालवे	13-06-09	बंसीलाल	19
3	एक्सपोजर विजिट	विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा	14 गाँवों के स्वयंसहायता समूह सदस्य एवं अवनी टीम	4-08-08 से 5-08-08	संस्थान टीम	25
4	मामलेट निर्माण	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	अवनी टीम	8-01-09	सुश्री रश्मी भारती	4
5	कुमकुम निर्माण	दिगोली केन्द्र	माणां, मटकोली, धौलानी एवं दिगोली के स्वयंसहायता समूह सदस्य	24-01-09	हरीश पंत	34

महिला समूह विगत 2 वर्षों से विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा से प्राप्त उत्तम गुणवत्ता के बीज का प्रयोग बुवाई हेतु कर रहे हैं। कुछ तकनीकी समस्याओं के कारण फसल अच्छी प्राप्त नहीं हुई। इस समस्या के समाधान हेतु दिनांक 4-08-08 से 5-8-08 तक विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा हेतु प्रदर्शन भ्रमण आयोजित किया गया। विभिन्न गाँवों के 17 स्वयंसेवा समूह सदस्यों एवं अपनी टीम के 8 सदस्यों द्वारा इस प्रदर्शन भ्रमण में सहभागिता की गई। इस भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर जानकारी प्राप्त की।

- फसलों को लगने वाली बीमारी एवं बचाव के उपाय।
- कुरमुला नियंत्रण।
- ड्रिप ईरीगेशन
- पालीहाउस निर्माण एवं उत्पादन तकनीक
- कृषि इंजिनियरिंग

हल्दी उत्पादन एवं रंगाई सामग्री संग्रहण ग्रामीण स्तर पर स्थाई आजीविका के कार्यक्रम के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन एवं मुर्गी पालन के क्षेत्र में भी शुरुआत की गई है।

- ग्रामीणों से 361 किग्रा हल्दी एवं 500 नग नींबू अपनी द्वारा कुमकुम निर्माण हेतु खरीदे गये। सदस्यों द्वारा ₹ 13,642 की आय उपार्जित की गई।
- अपनी फार्म से भी 15 किग्रा हल्दी खरीदी गई।
- 475 किग्रा तैयार रंगाई सामग्री एवं 100.43 किग्रा रीठा पाऊंडर अपनी द्वारा ग्रामीणों से खरीदा गया। इस सामग्री का प्रयोग तागे एवं कपड़े की रंगाई, प्राकृतिक रंग बनाने तथा धुलाई हेतु किया जा रहा है। इस कार्यक्रमों से ₹ 41,691 की आय उपार्जित की गई।
- ग्राम सानीउडियार, सुकना एवं माणा में 3 पालीहाउस निर्मित किये गये।
- ग्रामीणों को 465 मुर्गी के चूजे उपलब्ध कराये गये। इस हेतु ₹ 11,625 का ब्याजमुक्त ऋण उपलब्ध कराया गया। अब तक ₹ 10,000 का ऋण वापस किया जा चुका है।
- इस वर्ष हमने माल्टा से मार्मलेड बनाने का भी प्रयोग किया। कुल मिलाकर 8 बोतल मार्मलेड तैयार किया गया। हमें उम्मीद है कि अधिक संगठित रूप से उत्पादन करने से हम बिक्री हेतु उत्तम गुणवत्ता का मार्मलेड बनाने में सक्षम होंगे।

मधुमक्खी पालन हेतु भी प्रशिक्षण का आयोजन त्रिपुरादेवी केन्द्र में किया गया। इस प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षक के रूप में कीस्टोन फाउंडेशन नीलगिरी, तमिलनाडु की सेवाएँ प्राप्त की गई। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं पर जानकारी प्राप्त की गई।

- मधुमक्खियों की प्रजातियाँ
- मधुमक्खी पालन की तकनीक
- शहद निकालने की विधि
- कालौनी बढ़ाने की विधि
- शहद एकत्रीकरण का समय आदि

प्रशिक्षण के बाद 2 मधुमक्खी कालौनियों की स्थापना की गई तथा बाद में दो अन्य कालौनियों की बसावट की गई। वर्तमान में त्रिपुरादेवी में कुल चार कालौनियाँ स्थापित हैं। दो मधुमक्खियों के बॉक्स से 2.5 किग्रा शहद एकत्रित किया गया।

4.2 बालिका शिक्षा :-

वर्तमान में हम 7 गाँवों के 8 बालिकाओं को उनकी पढ़ाई जारी रखने हेतु सहायता प्रदान कर रहे हैं। पढ़ाई में ध्यान नहीं देने एवं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण 2 बालिकाओं को इस वर्ष सहायता नहीं दी गई है। एक अन्य लड़की की कक्षा दसवीं में उत्तीर्ण होने के बाद शादी हो गई है। वर्ष 2009-10 में हम और अधिक लड़कियों को सहायता प्रदान करने की कार्ययोजना तैयार कर रहे हैं।

वर्ष 2008-09 में बालिका शिक्षा हेतु प्राप्त कुल आर्थिक सहयोग
किताबों, ड्रेस एवं ट्यूशन फी पर खर्च –
(ग्राम बल्टा के स्कूल का खर्चा भी शामिल)

रु0 80,055

रु0 51,532

4.3 वयस्क साक्षरता :-

वयस्क साक्षरता के स्पष्ट फायदों के बावजूद हमें महसूस हो रहा है कि समुदाय में इसकी स्वीकार्यता उतनी नहीं है जितनी होनी चाहिए थी। इसलिये हमने इस कार्यक्रम को कुछ समय के लिये लंबित कर दिया है। हमें आशा है कि हम इस कार्यक्रम के प्रति और अधिक उत्साह पैदा करने में सफल होंगे इससे महिला सशक्तीकरण की दिशा में दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। हमने नव साक्षरों हेतु पिटारा एवं उत्तरा जैसी पत्रिकाओं को मँगाना जारी रखा है। कारीगर एवं अन्य ग्रामीण इन पत्रिकाओं का प्रयोग कर रहे हैं।

ग्राम दिगोली एवं सुकना में विगत वर्ष स्थापित कंप्यूटरों में कार्य आरंभ हो गया है। दोनों केन्द्रों में कंप्यूटर संचालन हेतु प्रशिक्षण आयोजित किये जा चुके हैं तथा वर्तमान में सुपरवाइजर कंप्यूटर संचालन में सक्षम हैं। हम **ग्रामीणों** को भी कंप्यूटर संचालन में प्रशिक्षित करने की कार्ययोजना पर कार्य कर रहे हैं। धरमघर केन्द्र में पावर प्लॉट में आ रही समस्याओं के कारण इस केन्द्र में प्रशिक्षण कार्य आयोजित नहीं किया जा सका है। हमें उम्मीद है कि वर्ष 2009-10 में हम इस केन्द्र में कंप्यूटर प्रशिक्षण आयोजित करने में सक्षम होंगे।
कंप्यूटर प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 23 में दिया गया है।

तालिका 23

क्रम सं.	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	प्रशिक्षक
1	कंप्यूटर प्रशिक्षण	6-09-08 से 31-03-09	दिगोली केन्द्र	गोविंद, ललिता, हीरा, मनोज एवं हरीश	सुश्री रेनु बोरा
2	कंप्यूटर प्रशिक्षण	1-08-08 से 30-11-08 तक	सुकना केन्द्र	हरीश टम्टा जगदीश बोरा	गोकुल सिंह

5. वर्षा जल संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल का पुनः प्रयोग :-

अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी, दिगोली, सुकना एवं धरमघर केन्द्र अपनी पानी की आवश्यकताओं की अधिकांश पूर्ति वर्षा के जल से कर रहे हैं। ग्रामीण स्तर पर समस्त फील्ड सेंटरों की जल संग्रहण क्षमता लगभग 1,00,000 ली0 है जिसका प्रयोग वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कर रहे हैं। त्रिपुरादेवी केन्द्र में हम वर्ष भर लगभग 7 महिने वर्षा के पानी पर निर्भर रहते हैं। इस दौरान हम खाना पकाने, प्राकृतिक रंगाई, हस्तशिल्प हेतु ऊन, तागे एवं कपड़े की धुलाई एवं 35 कार्यकर्ताओं की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति वर्षा के जल से कर पा रहे हैं। वर्ष में बाकी समय के लिये हमें अभी 5 किलोमीटर की दूरी से ट्रक से पानी लाना पड़ रहा है।

तालिका 24

अवनी परिसर में वर्षाती जल संग्रहण	मात्रा 2006-07	मात्रा 2007-2008	मात्रा 2008-09
टैंकों की कुल सं०	4	4	4
कुल संग्रहण क्षमता	3,25,000 ली०	3,25,000 ली०	3,25,000 ली०
मानसून के दौरान कुल संग्रहीत जल	7,60,000 ली०	12,00,000 ली०	9,35,000 ली०
पानी की दैनिक खपत	5,000 ली०	5,000 ली०	5000 ली०
कुल दिन जब वर्षाती पानी का प्रयोग किया गया	152 दिन	240 दिन	187 दिन
5 किलोमीटर दूर से ट्रक से पानी न लाने की एवज में बचत	रु० 38,000	रु० 60,000	रु० 56,100

● निष्प्रयोज्य जल संशोधन :-

त्रिपुरादेवी केन्द्र में स्थापित निष्प्रयोज्य जल संशोधन संयंत्र विगत 1 वर्ष से कार्यरत है। इस संयंत्र की सहायता से लगभग 2,000 ली० पानी दैनिक रूप से संशोधित किया जा रहा है। इस संशोधित पानी का सिंचाई हेतु प्रयोग करने से हम इस वर्ष अपने फार्म में और अधिक सब्जी उत्पादन में सफल हुए हैं। यह संयंत्र अन्य संस्थाओं एवं सरकारी विभागों के लिये एक अच्छा प्रदर्शन केन्द्र भी साबित हो रहा है। कुछ सरकारी अधिकारियों द्वारा इस संयंत्र का भ्रमण भी किया गया है।

6. प्राकृतिक कृषि :-

प्राकृतिक कृषि की विभिन्न पद्धतियों को प्रदर्शित करने हेतु अवनी केन्द्र के फार्म में बायोगैस स्लरी, वर्मिकम्पोस्ट एवं मिट्टी को पुनर्जीवित करने की समस्त तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है। इस वर्ष के दौरान इस फार्म का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

- त्रिपुरादेवी केन्द्र में 3 वर्मिकम्पोस्ट पिटों का निर्माण किया गया जिनके माध्यम से 1,000 किग्रा खाद का उत्पादन किया गया।
- त्रिपुरादेवी स्थित फार्म में एक ड्रिप ईरीगेशन सिस्टम की भी स्थापना की गई।
- इन समस्त तकनीकों के प्रयोग से हमें अपने फार्म की उत्पादकता बढ़ाने में सहायता मिली है। इस वर्ष फार्म द्वारा रु० 24,973 की आय उपार्जित की गई है।
- इस वर्ष के दौरान हमने सुधरी हुई प्रजाति के फलों जैसे, आड़ू, खुमानी, पुलम एवं नाशपाती की कलम भी अवनी फार्म में की है।
- त्रिपुरादेवी केन्द्र स्थित डेयरी भी विगत वर्ष की तुलना में इस वर्ष बेहतर स्थिति में रही।
- ग्रामीण स्तर पर 35 किसानों द्वारा अपनी जमीन पर वर्मिकम्पोस्ट पिटों का निर्माण किया गया। 5 किसानों द्वारा 500 किग्रा वर्मिकम्पोस्ट खाद तैयार की गई।

फार्म के उत्पादन का विवरण तालिका 25 एवं 26 में दिया गया है।

तालिका 25

विवरण	बीज लागत	2006-07		2007-08		2008-09	
		उत्पादन	आय	उत्पादन	आय	उत्पादन	आय
उगल	310	23 गट्टे	115	26 गट्टे	156	153 गट्टे	1071
मेथी	115	50 गट्टे	300	207 गट्टे	1449	201 गट्टे	1407
फासबीन	50	34.23	785	5 किग्रा	112	17.75 किग्रा	462

		किग्रा					
लहसुन	150	2.5 किग्रा	100	1.4 किग्रा	112	5.5 किग्रा	220
टमाटर	190	32.5 किग्रा	975	12.5 किग्रा	306	11.25	260
केला	0	151	302	106	306	243	466
मूली	292	पत्ते 257 गठटे जड़ 17. 55 किग्रा	1,438	पत्ते 168 गठटे जड़ 20.4 किग्रा	1452	पत्ते 295 गठटे जड़ 42.05 किग्रा	3076
भिंडी	0	0	0	4.85 किग्रा	110	0	0
शिमला मिर्च	10	0	0	—	0	3.7 किग्रा	104
ककड़ी	155	22.35 किग्रा	344	15 किग्रा	300	71.35 किग्रा	1150
हरी मिर्च	10	8.9 किग्रा	362	2.45 किग्रा	98	.5 किग्रा	20
कददू	50	131.75 किग्रा	1748	78.7 किग्रा	1102	133.7 किग्रा	2141
मक्का	75	66	330	90	300	90	270
अदरक	0	17.85 किग्रा	714	20 किग्रा	800	50 किग्रा	2000
अरबी	0	पत्ते 4 गठटे जड़ 37 किग्रा	615	पत्ते 25 गठटे जड़ 26.4 किग्रा	623	पत्ते 5 गठटे जड़ 21.25 किग्रा	370
करेला	0	0	0	73	1164	2.5 किग्रा	50
हल्दी	0	0	0	119.4 किग्रा	3752	15 किग्रा	450
मीठा करेला	0	0	0	0	0	0	0
धनिया	472	303 गठटे	750	784 गठटे	3001	853 गठटे	3412
लाई	75	206 गठटे	1,648	451 गठटे	2743	184 गठटे	1104
पालक	235	101 गठटे	606	330 गठटे	2092	314 गठटे	1942
माल्टा	0	50	100	294	588	290	580
नींबू	0	25	125	107	505	311	933
तोरई	150	8.45 किग्रा	228	0.5 किग्रा	12	5.25 किग्रा	105
मटर	60	.9 किग्रा	16	25.75 किग्रा	545	34.45 किग्रा	799
बैंगन	60	1 किग्रा	24	0	0	49.75 किग्रा	995
गीठी	0	0	0	2 किग्रा	40	1.25 किग्रा	25

हालन	0	0	0	12 गठ्ठे	72	0	0
गोबी	120	0	0	10 किग्रा	140	22.2 किग्रा	315
शलजम	0	0	0	2.5 किग्रा	40	0	0
आलू	220	0	0	0	0	55 किग्रा	440
चौलाई	0	0	0	0	0	65 गठ्ठे	390
प्याज	10	0	0	0	0	7 गठ्ठे	70
चना	20	0	0	0	0	1.25 किग्रा	50
सरसों	0	0	0	0	0	18 गठ्ठे	144
लौकी	10	0	0	0	0	9 किग्रा	152
कुल			11,625		21,920		24,973

तालिका 26

विवरण	मात्रा	दर रु0	आय रु0
दूध (ली0)	1337.99	18	24,083
वर्मिकम्पोस्ट (किग्रा)	1000	8	8,000
बायोगैस स्लरी (डलिया)	260	3	1,080
कुल आय			33,163
खली एवं घास पर खर्च			10,085

7. रेशम की खेती

वन्य रेशम ईरी एवं मूंगा की खेती :-

हमने ईरी, मूंगा एवं ओकटसर रेशम की खेती हेतु नये किसानों को जोड़ने का कार्य जारी रखा है। इस वर्ष 15 नये गाँवों में ईरी एवं मूंगा की खेती का कार्य आरंभ किया गया। उन पुराने गाँवों में भी कुछ नये किसानों को इस कार्य में जोड़ा गया जहाँ पूर्व के वर्षों में कार्य आरंभ किया जा चुका है।

ओकटसर की खेती का कार्य ग्राम बास्ती में लगातार दूसरे वर्ष भी जारी रखा गया। हमारे लिये यह महत्वपूर्ण उपलब्धि रही कि हम ऐसे नाजुक समय में ओकटसर कोकून उत्पादन में सफल रहे जब बीज निर्माण के लिये भी ओकटसर कोकून उपलब्ध नहीं थे।

इस वर्ष के दौरान 25 गाँवों के 156 किसानों द्वारा 17.82 एकड़ भूमि में मूंगा भोज्य पौध (लिटसिया पौलिऐंथा एवं मिखैलिस बौबासिना) तथा 48 एकड़ भूमि में ईरी भोज्य पौध (कैस्टर) का रोपण किया गया। किसानों द्वारा गाँवों में स्थापित नर्सरी से 6,000 पौध प्राप्त करके उनका रोपण किया गया। ग्राम चनकाना के 7 किसानों द्वारा 7 नर्सरियों की स्थापना की गई तथा एक नर्सरी की स्थापना अवनी केन्द्र में की गई। इन नर्सरियों से वर्ष 2009-10 के पौधारोपण हेतु लगभग 6,000 पौध प्राप्त होने की संभावना है।

इस वर्ष के दौरान कुल 8 ईरी कीटपालन गृहों का निर्माण किया गया। अब तक कुल मिलाकर 27 ईरी कीटपालन गृहों का निर्माण किया जा चुका है।

कार्यक्रम से जुड़े नये गाँवों एवं किसानों का विवरण तालिका 27 में दिया गया है।

तालिका 27

गाँव का नाम	किसानों की सं०		रोपित क्षेत्र		कुल किसान	कुल क्षेत्र
	ईरी	मूँगा	ईरी	मूँगा		
नाली	6	0	3	0	6	3
बैसाली	2	0	1	0	2	1
सिमायल	6	0	3	0	6	3
दौला	1	0	0.5	0	1	0.5
देवलेत	1	5	0.5	2.12	6	2.62
ढानण	1	3	0.5	1.2	4	1.7
कफाली	2	2	1	1	4	2
लिंगुरानी	7	8	3.5	1.84	15	5.34
बोराखेत	2	2	1	0.24	4	1.24
मझेड़ा	1	3	0.5	0.6	4	1.1
पाटाडुंगरी	6	0	3	0	6	3
कन्यागाड़	4	0	2	0	4	2
लेटगाड़ी	1	0	0.5	0	1	0.52
पानीगाड़	2	0	1	0	2	1
ज्यूला	2	3	1	1	5	2
कुल	44	26	22	8	70	30.02

पुराने गाँवों में जोड़े गये नये किसानों का विवरण तालिका 28 में दिया गया है।

तालिका 28

गाँव का नाम	किसानों की सं०		रोपित क्षेत्र		कुल किसान	कुल क्षेत्र
	ईरी	मूँगा	ईरी	मूँगा		
मुसलगाड़	1	0	0.5	0	1	0.5
महरौड़ी	7	0	3.5	0	7	3.5
ब्याती	3	1	1.5	0.12	4	1.62
वर्षायत	11	9	5.5	4.06	20	9.56
चाख	7	4	3.5	0.44	11	3.94
बेलकोट	6	0	3	0	6	3
चंतोला	0	7	0	2.72	7	2.72
चनकाना	3	8	1.5	1.38	11	2.88
जखेड़ी	1	0	0.5	0	1	0.5
बानड़ी	4	3	2	0.6	7	2.6
डाना	6	2	3	0.5	8	3.5
मटकोली	3	0	1.5	0	3	1.5
कुल	52	34	26	9.82	86	35.82

7.1 प्रशिक्षण एवं कोकून पालन :-

इस वर्ष के दौरान 12 गाँवों के 23 किसानों के साथ ईरी कीटपालन का कार्य किया गया। 11 गाँवों के 20 किसानों द्वारा 800 डीएफएल ईरी कीटाणु तथा 1 गाँव के 3 किसानों द्वारा 50 डीएफएल मूंगा कीटाणुओं का पालन किया गया। इस वर्ष के दौरान भी समय से उपयुक्त मौसम में कीटाणु प्राप्त नहीं हो पाये। शरद मौसम की फसल हेतु हमने 800 डीएफएल कीटाणु रेशम विभाग से मँगाये थे लेकिन केवल 300 डीएफएल कीटाणु उपलब्ध कराये गये और वह भी 1 महिना देरी से उपलब्ध हुए। वर्षा का मौसम आरंभ होने के कारण काफी संख्या में कीट मर गये।

कुल कोकून उत्पादन

ईरी कोकून	102 किग्रा
मूंगा कोकून	1,785 नग
कोकून उत्पादन से कुल आय रु0 7,395	

प्रशिक्षण

विषय	स्थान	अवधि	सहभागी	गाँव
ईरी कोकून पालन प्रशिक्षण	रेशम प्रशिक्षण महाविद्यालय, रेशम निदेशालय, प्रेमनगर देहरादून	21-12-08 से 24-12-08	हीरा सिंह मनोज बोरा सूरज कुमार दिवान राम किशन सिंह मोहन राम भगत राम	माण्डा, औलानी, सिमायल, ब्याती, डाना,

ओकटसर कीटपालन—

ओकटसर कीटपालन का कार्य ग्राम बास्ती में वर्ष 2007-08 में आरंभ किया गया था लेकिन भारी बारिश एवं बिमारी के कारण अपेक्षित फसल प्राप्त नहीं हुई। इस अनुभव से सीख लेते हुए हमने इस बार कीटपालन गृह को रोगाणुमुक्त रखने के लिये पूर्व में तैयारी की तथा कीटपालन के दौरान अतिरिक्त सावधानी बरती।

इस वर्ष के दौरान 400 डीएफएल ओकटसर कीटाणु पाले गये। इस कीटपालन के परिणाम हमारे लिये काफी उत्साहवर्द्धक रहे। हमने बास्ती गाँव में 24,000 ओकटसर कोकूनों का उत्पादन किया। इस कीटपालन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि हम ऐसे नाजुक समय में कीटपालन करने में सफल हुए जब बिमारी के कारण बीज निर्माण हेतु भी कोकून उपलब्ध नहीं थे।

उत्तम गुणवत्ता के 17,000 ओकटसर कोकून क्षेत्रीय टसर अनुसंधान केन्द्र भीमताल को कीटाणु बनाने हेतु भेजे गये। इन कोकूनों से निर्मित कीटाणुओं को वर्ष 2009-10 की ग्रीष्म फसल हेतु देश के विभिन्न भागों में भेजा गया। क्षेत्रीय टसर अनुसंधान केन्द्र भीमताल द्वारा पूर्व में ही इन कीटाणुओं से कीटपालन कार्य आरंभ किया जा चुका है। कीटाणु निर्माण के बाद कोकून सैल को गाँवों में कटाई हेतु अवनी को वापस किया जा चुका है। ओकटसर की खेती से ग्रामीणों द्वारा कुल मिलाकर रु0 14,000 की आय उपार्जित की गई।

हमें क्षेत्रीय टसर अनुसंधान केन्द्र भीमताल में आयोजित कृषक कार्यशाला में भी आमंत्रित किया गया। ग्राम बास्ती के 4 किसानों के साथ एक अवनी प्रतिनिधि द्वारा भी इस कार्यशाला में सहभागिता की गई।

तालिका 29

विवरण	2006-07	2007-08	2008-09
कुल किसान – ईरी	50	39	96
कुल किसान – मूंगा	63	40	60
स्थापित नर्सरी		14	8
कुल पौधारोपण क्षेत्र	75.6 एकड़	59.5 एकड़	65.84 एकड़
कुल आय	रु0 3,670	5,544	7,395

कृषक कार्यशाला, त्रिपुरादेवी-

कोकून निर्माण की प्रक्रिया के बाद की प्रसंस्करण क्रिया को समझने में सहायता प्रदान करने एवं किसानों के बीच आपसी **संवाद के विकास** हेतु दिनांक 31 मार्च 2009 को अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी में कृषक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 20 गाँवों के 78 किसानों द्वारा सहभागिता की गई।

इस कार्यशाला के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित प्रकार थे।

- विभिन्न गाँवों के किसानों के मध्य आपसी संपर्क को विकसित करना।
- रेशम की खेती की **तकनीकी** जानकारी देना।
- कोकून निर्माण के बाद की प्रक्रिया से किसानों को अवगत कराना।
- स्थानीय सत्त आजीविका अवसरों के संबंध में समझ विकसित करना।

कार्यशाला के दौरान आयोजित कार्यक्रम

- त्रिपुरादेवी केन्द्र में बुनाई एवं रंगाई कार्यशाला का भ्रमण
- वर्षा जल संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल प्रबंधन की तकनीकी का प्रदर्शन
- कोकून निर्माण के संदर्भ में फिल्म का प्रदर्शन
- किसानों को उपकरण वितरण

किसानों को दिये गये उपकरणों का विवरण तालिका 30 में दिया गया है।

तालिका 30

किसान	ट्रे	डलिया	स्टैंड	गेंती	कुदाली	खुरपी	फावड़ा	पंप	जाली	चलौनी	कटर
ईरी	200	200	50	50	50	50	50	50	—	—	—
मूंगा	—	200	—	63	63	63	63	—	64	200	63
कुल	200	400	50	113	113	113	113	50	64	200	63

8. स्वास्थ्य सुरक्षा

8.1 स्वास्थ्य बीमा :-

कारीगरों के स्वास्थ्य बीमा हेतु हम विकास आयुक्त हस्तशिल्प कार्यालय के साथ कार्य जारी रखे हुए हैं। अगले वर्ष हम स्वास्थ्य बीमा से और अधिक कारीगरों को लाभान्वित करने में सक्षम होंगे।

8.2 स्वास्थ्य शिविर :-

स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में अपनी छोटी पहल को जारी रखते हुए हमने संस्था में आने वाले डॉक्टरों के साथ चर्चाएं आयोजित की हैं तथा रोगियों को अन्य सब्सिडाइज्ड एवं भरोसेमंद स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ प्रदान करवाया है।

- इस वर्ष के दौरान दो स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया।
- प्रसव के बाद की सावधानी के बारे में जानकारी देने हेतु ग्राम चनकाना एवं त्रिपुरादेवी केन्द्र में दिनांक 9 जुलाई से 11 जुलाई 2008 तक चर्चाएं आयोजित की गईं। बेंगलूर से डॉ० रेनू द्वारा इन चर्चाओं में सहजकर्ता की भूमिका निभाई गई।
- हम रोगियों को अन्य संस्थानों जैसे जिला नैनीताल स्थित संस्था आरोही एवं श्रीवास्तवा क्लिनिक रानीखेत के माध्यम से प्रदत्त निशुल्क एवं छूटयुक्त स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त करने हेतु भी दिशा निर्देशन प्रदान कर रहे हैं।
- ग्राम रावलगाँव एवं ग्राम महरौड़ी के दो व्यक्तियों द्वारा आरोही में आयोजित शिविर में मोतियाबिन्द का ऑपरेशन करवाया गया। अवनी के एक कार्यकर्ता द्वारा उन्हें आरोही तक ले जाने एवं वापस लाने की जिम्मेदारी वहन की गई।
- अवनी के एक कारीगर का गाल ब्लेडर की पथरी का ऑपरेशन सब्सिडाइज्ड कीमत पर श्रीवास्तवा क्लिनिक कालिका रानीखेत में किया गया। ग्राम बना के एक अन्य स्कूली लड़के की घुटने की बड़ी हुई हड्डी का ऑपरेशन किया गया जोकि अगले कुछ सालों में उसकी अपंगता का कारण बन सकता था। ये ऑपरेशन अत्यधिक सब्सिडाइज्ड खर्च पर किये गये।

हम ग्राम दिगोली में एक प्राकृतिक प्रसव केन्द्र की स्थापना की भी योजना बना रहे हैं, जोकि नजदीकी सड़क मार्ग से 3 घंटे की दूरी पर स्थित है तथा नजदीकी अस्पताल नजदीकी सड़क से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस प्रसव केन्द्र की स्थापना हेतु इजराईल की दाई सुश्री सहाफ गौफर से सहायता एवं सलाह प्राप्त कर रहे हैं। सुश्री गौफर गोवा में प्राकृतिक प्रसव केन्द्र के साथ कार्य कर रही हैं तथा दिगोली में इस केन्द्र की स्थापना हेतु सहायता देने की पहल उनके द्वारा की गई है।

इस केन्द्र की स्थापना हम व्यक्तिगत दानदाताओं के सहयोग से करने की योजना बना रहे हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु रु० 16,000 की धनराशि सहायता के रूप में प्राप्त की जा चुकी है।

क्रम सं०	अवधि	स्थान	डॉक्टर	प्रतिभागी
1	8-4-2008 से 10-4-2008	अवनी, त्रिपुरादेवी	डॉ० एस श्रीनिवासन, इंद्रप्रस्थ अपोलो क्लिनिक, नई दिल्ली	49
2	22-5-2008	अवनी, त्रिपुरादेवी	डॉ० एस श्रीनिवासन, इंद्रप्रस्थ अपोलो क्लिनिक, नई दिल्ली	36

9. कार्यशाला एवं बैठकें :-

हम अपनी के कार्यों का प्रस्तुतीकरण विभिन्न क्षेत्रों में करने एवं अधिकाधिक लोगों तक इस कार्य को पहुँचाने में सफल रहे हैं। इस प्रक्रिया से संस्था के लिये सकारात्मक सहयोग का सृजन हुआ है। विगत वर्ष के दौरान हमने निम्नलिखित स्थानों पर अपने कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया है।

दिनांक	स्थान	आयोजक
30 सितंबर 2008	ईटली	श्री ब्रूनो एवं सुश्री मिलेना जारो
4 एवं 5 अक्टूबर 2008	फ्रांस	सुश्री एलीट कूस्टन
5 एवं 6 जनवरी 2008	बैंगलूर	अत्री, बैंगलूर

10. विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक :-

इस वर्ष विभिन्न संस्थानों के तीन विद्यार्थियों एवं 5 स्वयंसेवकों द्वारा हमारे केन्द्रों पर कार्य किया गया। विद्यार्थी निम्नलिखित संस्थानों से आये।

- राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद
- डिजाइन लैब, मासाचुसैट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, संयुक्त राज्य अमेरिका।
- टवेंट विश्वविद्यालय, नीदरलैंड।

11. वर्ष 2008-09 के दौरान मेहमान :-

विवरण	भारतीय	विदेशी	कुल
विजिटर	18	34	52
स्वयंसेवक	0	5	5
स्कूल/कालेज के विद्यार्थी	15	0	15
सरकारी अधिकारी	5	0	5
डिप्लोमा विद्यार्थी	3	0	3
कुल	41	39	80

12. अन्य संस्थानों से सहयोग :-

हुनरशाला, गुजरात
राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद
कुमोऊ आर्टिजन गिल्ड, रानीखेत
आरोही, नैनीताल
अंकुर साइंटिफिक, बड़ौदा
विवेकानंद कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग
पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर
काफट कौंसिल ऑफ़ इंडिया, दिल्ली
पीपल ट्री, दिल्ली
दि वीवर्स व्हील नेटवर्क, गोवा

बेयरफुट, गोवा
श्रमिक भारती, कानपुर
आइका, नई दिल्ली
सिल्क मार्क आर्गनाइजेशन, बम्बई
दस्तकार, दिल्ली
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बँगलौर
रेशम विभाग हल्द्वानी एवं देहरादून
क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, भीमताल
फ्रेंड्स ऑफ तिलोनियां, संयुक्त राज्य अमेरिका
ली पैसर, डैकोरेशन, फ्रांस
टवेंट विश्वविद्यालय, नीदरलैंड
मासाचुसेट्स **इंस्टीट्यूट** ऑफ टैक्नॉलॉजी, संयुक्त राज्य अमेरिका
एशोसिएशन एमिसी डेला स्कूला ल्यूमान, इटली
एग्री टयूरिस्मो कैस्कना डेई फूटासेश, इटली

13. हमारे संस्थागत वित्तीय सहयोगी :-

1. वोल्कार्ट विजन इंडिया, स्विटजरलैंड
2. वोल्कार्ट फाऊंडेशन, भारत
3. फोर्ड फाऊंडेशन, नई दिल्ली
4. बेसिक नीड्स, यूनाईटेड किंगडम
5. केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बँगलौर
6. रेशम निदेशालय, हल्द्वानी एवं देहरादून
7. कैफ, अमेरिका

14. व्यक्तिगत दानदाता 2008-09 :-

1. श्री अभिराम सेठ
2. श्री शैलेश कुमार, एस. वी. चैरीटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. सुश्री मोईना रे, देहरादून
4. सुश्री पामेला टोपले, पूना
5. सुश्री पामेला चटर्जी, कौसानी
6. सुश्री शांति, पूना
7. स्वामी समवादो, पूना
8. सुश्री किशोर वोरा, पूना
9. सुश्री भारती सांघवी, पूना
10. श्री राजीव बोरा, पूना
11. सुश्री गीता पाटकर, पूना
12. श्री तपन बासु, पूना
13. डॉ ऊषा मलखानी, पूना
14. सुश्री कैथरीन कौनफिनो, कौसानी
15. श्री सी. टी. वोरा, पूना
16. सुश्री अलैजेंड्रा एल एबाटे, गोवा

15. व्यक्तिगत सहयोग हेतु आभार :-

श्री अमर सेठ, दिल्ली
डॉ एस श्रीनिवासन, दिल्ली
डॉ रेनू, बेंगलूर
सुश्री कैथरीन कौनफिनो, फ्रांस
श्री मिशेल कूबा, फ्रांस
सुश्री अलैजेंड्रा एल एबाटे, इटली
श्री ब्रूनो एवं सुश्री मिलेना जारो, इटली
श्री मैथ्यू कूबा, फ्रांस
सुश्री एलीट कूस्टन, फ्रांस
सुश्री किटो थोमासैरी, फ्रांस

16. केस स्टडी :-

इन सफल कहानियों को प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य इस बात को दर्शाना है कि जब उपयुक्त अवसर व जगह उपलब्ध हों तो लोगों की छुपी हुई संभावनाएँ विकसित एवं सशक्त हो सकती हैं।

हमारे कार्य में देखने को मिला है कि जिन लोगों को किसी कारणवश पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला उन्होंने मौका मिलने पर अपने जीवन को सँवारा है। सदूरवर्ती गाँवों के गरीब लोगों को अपनी प्रतिभा को निखारकर अपने पाँवों पर खड़ा करना, हमारे लिये एक सुखद अनुभव रहा है।

इस संदर्भ में हम यहाँ पर कुछ केस स्टडी का उल्लेख कर रहे हैं हालाँकि इस तरह की अनेक अन्य कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

केस स्टडी 1

गीता मेहरा

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
गीता मेहरा 25 वर्ष	कक्षा 8 वीं उत्तीर्ण	2004	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की शाल बुनाई की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनी अल्मोड़ा पैटर्न का ताना लगाने, भराई एवं बुनाई में सक्षम



गीता मेहरा ग्राम बास्ती की निवासी हैं जो निकटवर्ती सड़क मार्ग से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गीता को अवनी केन्द्र तक पहुँचने के लिये प्रतिदिन एक घंटे का समय लगता है। गीता का बचपन गाँव में बीता तथा कक्षा आठवीं तक की पढ़ाई उसने गाँव के ही स्कूल से पूर्ण की। गीता की शादी 16 वर्ष की उम्र में हो गई लेकिन उसका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा। उसके पति एवं ससुराल वालों द्वारा निरंतर उसकी उपेक्षा की गई। एक लड़की को जन्म देने के बाद

स्थितियाँ गीता के लिये बद से बदतर हो गई। ससुराल की समस्याओं से तंग आकर गीता अपनी 25 दिन की बेटी को लेकर अपने मायके वापस आ गई। गीता को आशा थी कि उसका पति उसे लेने जरूर आयेगा लेकिन जब वह नहीं आया तो गीता अपनी माँ के साथ पुनः अपने ससुराल गई। लेकिन परिस्थितियाँ पूर्ववत् बनी रहीं। जब गीता को स्थिति में सुधार की कोई संभावना नजर नहीं आई तो उसने अपने मायके वापस जाने का निर्णय कर लिया। उसके बाद से निरंतर उसकी देखभाल एवं आर्थिक मदद उसके मायके वालों द्वारा की गई।

गीता लगभग 5 वर्षों तक अपने माता पिता के साथ रही। हालांकि उसके माता पिता उसकी पूर्ण देखभाल करते थे लेकिन गीता उनसे आर्थिक मदद माँगने एवं अतिरिक्त सहायता लेने में हमेशा हिचक महसूस करती थी। गीता को महसूस हुआ कि सम्मानजनक एवं स्वाभिमानपूर्ण जीवन जीने के लिये आवश्यक है कि अपनी आजीविका स्वयं ही कमाई जाये। लेकिन कहाँ और कैसे एक महत्वपूर्ण प्रश्न उसके सामने था। जब गीता अवसर की तलाश में थी तो उसकी मुलाकात कमला राठौर से हुई जो धरमघर केन्द्र में बुनकर के रूप में कार्यरत थी। कमला के आग्रह पर गीता धरमघर केन्द्र में आई। यहाँ आने पर उसे महसूस हुआ कि यह जगह उसके लिये सबसे उपयुक्त है। गीता एक बुनकर प्रशिक्षणार्थी के रूप में इस केन्द्र के साथ जुड़ गई तथा कुछ ही महिनो में केन्द्र की एक मेहनती एवं कुशल बुनकर के रूप में सामने आई। गीता ने अल्मोड़ा पैटर्न की शाल का ताना लगाने एवं भराई में भी स्वयं को प्रशिक्षित किया।

विगत पाँच वर्षों से गीता एक कुशल बुनकर के रूप में कार्य करते हुए रु0 1,500 से रु0 2,000 तक मासिक आय अर्जित कर रही है। अपनी से जुड़ने के बाद गीता अपनी एवं अपनी बेटी की पूर्ण जिम्मेदारी बखूबी निभा रही हैं। गीता की बेटी वर्तमान में कक्षा पाँचवीं में पढ़ रही है। गीता अपनी बेटी की समस्त आवश्यकताओं जैसे, किताबों, स्कूल फीस, कपड़े एवं खिलौनों के खर्च का पैसा स्वयं वहन कर रही है। इस सबके अलावा गीता ने डाकघर में बचत खाता भी खोला है जिसमें वह रु0 200 मासिक रूप से जमा करती हैं। अपनी आय से गीता ने अपने घर में रोशनी हेतु सौर उपकरण की स्थापना भी की है।

केस स्टडी 2 लक्ष्मी देवी

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
लक्ष्मी देवी 35साल	निरक्षर	2004	बुनकर प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की शाल बुनाई की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनी। त्रिपुरादेवी केन्द्र में आयोजित वयस्क साक्षरता कक्षा में सहभागिता करके पढ़ाई एवं लिखाई का आधारभूत कौशल सीखा।

लक्ष्मी देवी बेरीनाग क्षेत्र के गाँव बेलड़ाआगर की निवासी हैं। लक्ष्मी देवी के पिता अकुशल मजदूर हैं तथा लक्ष्मी तीन बहनों में सबसे बड़ी हैं। आर्थिक परेशानियों के कारण लक्ष्मी देवी स्कूल नहीं जा पाई। 11 वर्ष की उम्र में उसकी शादी हो गई। लक्ष्मी का पति गाँव में ही टेलरिंग का कार्य करता था। लक्ष्मी को अपने ससुराल में कभी भी सम्मानजनक स्थान नहीं मिला। इस दौरान उसने एक बेटे को जन्म दिया लेकिन ससुरालवासियों का व्यवहार उसके प्रति नहीं बदला। इस परिस्थिति से तंग आकर लक्ष्मी एवं उसके पति ने घर छोड़कर लक्ष्मी के माता पिता के घर में रहने का निर्णय ले लिया।



लक्ष्मी के पति ने टेलर के रूप में कार्य करना जारी रखा। इस दौरान लक्ष्मी ने 2 और बच्चों को जन्म दिया। लक्ष्मी का जीवन उस दिन तक सामान्य रहा जिस दिन उसका पति काम की तलाश में शहर की तरफ गया। उसके बाद 12 वर्ष बीत जाने के बाद भी वह वापस नहीं लौटा। लक्ष्मी नहीं जानती कि उसका पति कहाँ है इस बात की भी जानकारी नहीं है कि वह जीवित भी है या नहीं। उसके बाद से लक्ष्मी अपने तीन बच्चों के साथ अपने माता पिता के साथ रह रही है।

जब लक्ष्मी के बच्चे बड़े होने लगे तो खर्च भी बढ़ने लगे वहीं दूसरी ओर बुढ़ापे में कार्य नहीं कर पाने के कारण लक्ष्मी के पिता उसे उतनी मदद नहीं कर पाते जितनी पूर्व में करते थे। काम की तलाश में लक्ष्मी वर्ष 2004 में अवनी के त्रिपुरादेवी केन्द्र स्थित बुनाई केन्द्र के संपर्क में आई।

6 माह के प्रशिक्षण के बाद लक्ष्मी स्वयं ही बुनाई करने लगी। उसने बहुत तेजी से कौशल अर्जित किया तथा शीघ्र ही कुशल बुनकर के रूप में स्थापित हो गई। लक्ष्मी अब रेशम एवं ऊन के शाल स्टोल के साथ साड़ी की बुनाई में भी सक्षम है। वर्तमान में वह रु0 1400 से रु0 1700 मासिक रूप से अर्जित कर रही हैं तथा स्कूल जाने वाले अपने तीनों बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है। लक्ष्मी की एक बेटी को अवनी द्वारा संचालित बालिका शिक्षा सहायता कार्यक्रम से भी सहायता प्राप्त हो रही है। लक्ष्मी की बहन भी अवनी के साथ सौर तकनीशियन के रूप में कार्य कर रही है।

लक्ष्मी की सीखने की प्रबल इच्छा ने उसे अवनी केन्द्र में संचालित वयस्क साक्षरता कार्यक्रम से जुड़ने हेतु प्रेरित किया। वर्तमान में वह लिखने का आधारभूत कौशल सीख चुकी है। अपने बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति के अलावा लक्ष्मी अपनी आय का कुछ भाग अपने माता पिता को घर का खर्च चलाने के लिये मासिक रूप से देती हैं तथा डाकघर के बचत खाते में रु0 100 मासिक रूप से जमा करती हैं।

केस स्टडी 3 ललिता आर्या

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
ललिता आर्या 21 वर्ष	8 वीं कक्षा उत्तीर्ण	2003	निटिंग	रेशम एवं ऊन की शाल बुनाई की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनी। सबसे अच्छी बुनकरों में शामिल। अल्मोड़ा पैटर्न की शाल का ताना लगाने, भराई करने एवं बुनाई करने में सक्षम



ललिता, जिला पिथौरागढ़ के गाँव मुँगराऊँ की निवासी हैं। ललिता के अनुसार उसके पिता मैदानी क्षेत्र में प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते हैं तथा विगत 8 वर्षों से न तो घर आये हैं और न ही घर की किसी आर्थिक जिम्मेदारी का वहन करते हैं। ललिता ने कक्षा 8 वीं तक की पढ़ाई की है। ललिता के परिवार में कभी आर्थिक मजबूती नहीं रही जिसको देखते हुए ललिता ने अपनी आजीविका स्वयं कमाने का निर्णय लिया, ताकि आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनने

के साथ-साथ वह परिवार की आर्थिक मजबूती में भी सहयोगी बने।

त्रिपुरादेवी केन्द्र की स्थापना के तुरंत बाद ललिता ने यहाँ कार्य करना आरंभ कर दिया। बुनाई में उसका हाथ काफी सटीक था जिसके कारण कुछ ही महिनों में वह केन्द्र की एक मेहनती एवं कुशल बुनकर बनकर उभरी। ललिता ने अल्मोड़ा पैटर्न की शाल का ताना लगाना एवं भराई भी सीखी।

ललिता विगत 6 वर्षों से त्रिपुरादेवी केन्द्र में बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं तथा मासिक रूप से ₹1,800 की आय अर्जित कर लेती हैं। उसने अपने परिवार को आर्थिक स्थायित्व देने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। अपनी अर्जित आय में से वह नियमित रूप से ₹1,500 अपनी माँ को घर का खर्च चलाने हेतु देती हैं तथा शेष राशि बैंक बचत खाते में जमा करती हैं। आर्थिक स्वालंबन पर गर्व से वह बताती है कि अभी हाल में उसने अपनी बचत से अपने परिवार के लिये रसोई गैस एवं अपने लिये मोबाईल फोन खरीदा है।

केस स्टडी 4

अनुली देवी

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
अनुली देवी 32 वर्ष	निरक्षर	2003	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की शाल बुनाई की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनी।

अनुली देवी जनपद पिथौरागढ़ के गाँव सुकना की निवासी हैं। सुकना गाँव नजदीकी सड़क मार्ग से 40 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित है। अनुली के पिता दैनिक मजदूरी का कार्य करते हैं जिससे उन्हें अनियमित एवं अपर्याप्त आय प्राप्त होती है। परिवार की आर्थिक परेशानियों के कारण अनुली कभी भी स्कूल नहीं जा पाई। 17 साल की उम्र में शादी के बाद अनुली ने अपने ससुराल में काफी परेशानियाँ झेली। घर एवं खेतों में अत्यधिक कार्य करने के बावजूद भी

ससुरालियों एवं पति का व्यवहार उसके प्रति सद्भावनापूर्ण नहीं था तथा उसे मूलभूत सुविधाएँ जैसे, कपड़े एवं भोजन के लिये भी संघर्ष करना पड़ता था।



अनुली अपने पति के साथ 6 वर्षों तक रही इस दौरान उसने एक बेटे को जन्म दिया। लेकिन स्थितियाँ अनुली के लिये पूर्ववत् बनी रहीं जिससे परेशान होकर अनुली ने अपना ससुराल छोड़ दिया तथा अपने बेटे को लेकर अपने पिता के घर चली आई। हालाँकि अनुली के माता पिता उसका पूर्ण ध्यान रखते थे लेकिन अनुली अंदर से महसूस करती थी कि स्वाभिमानपूर्वक जीने के लिये स्वयं ही अपनी जीविकोपार्जन करना

आवश्यक है। अनुली ने दैनिक मजदूर के रूप में गाँव में ही कार्य करना आरंभ किया लेकिन कार्य कम होने के कारण आय भी पर्याप्त नहीं थी। बेटे के छोटा होने के कारण वह दूर भी कार्य की तलाश में नहीं जा सकती थी। ग्राम सुकना में अवनी द्वारा संचालित बुनाई केन्द्र के बारे में जब अनुली ने सुना तो वह 2003 में प्रशिक्षणार्थी के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल हो गई। सुकना केन्द्र से प्रथम महिला के रूप में जुड़ने के बाद वह विगत 6 वर्षों से लगातार कार्य कर रही हैं। अनुली इस बात से काफी खुश है कि आर्थिक रूप से स्वालंबी होने के बाद वह अपने बेटे एवं अपनी देखभाल स्वयं कर रही हैं। अनुली के भाईयों के अलग रहने के बावजूद भी अनुली के बड़े माता पिता चिंतित नहीं हैं क्योंकि उनकी बेटी आराम से जीने के लिये पर्याप्त आय अर्जित कर लेती हैं। अनुली घर का समस्त कार्य करने के बाद बाकी समय में बुनाई कार्य करती हैं। वह काफी मेहनती है तथा अपना कार्य कुशलता पूर्वक करती हैं। वर्तमान में अनुली रु० 1700 मासिक रूप से अर्जित करती हैं जोकि पारिवारिक खर्च एवं बच्चे के स्कूली खर्च एवं दैनिक आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त है। इस सब के साथ अनुली ने अपनी बचत से अपने परिवार हेतु सौर उपकरण की स्थापना भी कर ली है।

केस स्टडी 5

मंजू बोरा

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
मंजू बोरा 21 वर्ष	5वीं कक्षा	2004	फिनिशिंग प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन के स्टोल एवं मफलर की बुनकर	उत्पादों की फिनिशिंग बहुत जल्दी एवं कुशलता से सीखी रेशम एवं ऊन के स्टोल एवं शाल की बुनाई एवं रील भराई एवं ड्रापिंग में सक्षम

मंजू बोरा दिगोली के नजदीक के गाँव माणा की निवासी हैं जोकि नजदीकी सड़क मार्ग से 3 घंटे की दूरी पर स्थित है। बचपन में पॉव फिसलने के कारण मंजू के कूल्हे की हड्डी अपने स्थान से हट गई। इससे उसका शारीरिक विकास बाधित हुआ जिसके कारण वह अपनी उम्र की तुलना में काफी छोटी दिखने लगी तथा चलने में काफी भिन्न दिखने लगी। अपनी

शारीरिक भिन्नता के कारण वह अक्सर शर्म एवं अकेलापन महसूस करती। एक सामान्य ग्रामीण लड़की की तरह जीवन बिताने का उसका सपना उसके लिये सपने की तरह लगने लगा।



मंजू ने ग्राम दिगोली स्थित अवनी केन्द्र में कार्य करना 5 वर्ष पूर्व आरंभ किया जब दिगोली फील्ड सेंटर इंचार्ज श्री हरीश पंत ने उसकी माँ को सुझाव दिया कि उसे अवनी केन्द्र में आकर कार्य करना चाहिए। आरंभ में कुछ शंकाओं के बाद जल्दी ही मंजू केन्द्र में कार्य करने वाली अन्य लड़कियों के साथ घुल मिल गई। उसने अपना कार्य बुनाई के तैयार सामान की फिनिशिंग से आरंभ किया जिसमें शामिल था गॉठ बँधाई एवं बुनाई के समय रह गई गलतियों को सुधारना आदि। मंजू ने बहुत जल्दी ही फिनिशिंग का कौशल अर्जित कर लिया तथा गलतियों को वह देखते ही पकड़ लेती। मंजू ने रील एवं बाबिन की भराई भी सीख ली। जब केन्द्र में लूमों की संख्या बढ़ाई गई तो मंजू को बुनाई हेतु प्रशिक्षित किया गया।

अपनी छोटी कद काठी के कारण मंजू अधिक चौड़ाई के शाल की बुनाई नहीं कर पाती लेकिन अन्य बस्तुओं की बुनाई में उसने स्वयं को एक कुशल बुनकर के रूप में स्थापित किया। ईरी एवं मूंगा रेशम की बुनाई में मंजू का कौशल विशेष सराहनीय है। दिगोली केन्द्र में कार्य करने हेतु बढ़ाये गये कदम से मंजू काफी खुश है। वर्तमान में मंजू मासिक रूप से ₹0 1,000 से ₹0 1,500 तक की आय अर्जित कर लेती है जोकि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ छोटी बचत के लिये भी पर्याप्त है।

केस स्टडी 6

मीना कुमारी

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
मीना कुमारी 23 वर्ष	5 वीं कक्षा	2002	सौर तकनीशियन प्रशिक्षणार्थी	सौर तकनीशियन	सौर लालटेन का संयोजन, सौर उपकरणों के रखरखाव एवं रिपेयर, तथा इलैक्ट्रिकल फिटिंग में सक्षम। अवनी में स्थापित सोलर पावर प्लांट के रखरखाव एवं समस्त देखभाल तथा वितरण व्यवस्था की जिम्मेदारी व्यवस्था के संचालन में सक्षम

मीना कुमारी राईआगर की निवासी हैं जोकि अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह केवल कक्षा 5 वीं तक की पढ़ाई कर पाई। मीना के परिवार के पास कोई कृषि भूमि नहीं है तथा उसके पिता दैनिक मजदूर के रूप में कार्य करते हुए कभी कभार ही आय अर्जित कर पाते हैं। मीना के बड़ी बहन की शादी हो चुकी है लेकिन उसके माता पिता को अब भी उनके दो बेटियों की जिम्मेदारी वहन करनी पड़ती है। अपने दोस्तों एवं अन्य महिलाओं से अवनी के बारे में जानने के बाद

मीना ने अवनी में आने का निश्चय किया तथा सौर तकनीशियन प्रशिक्षणार्थी के रूप में कार्य करना आरंभ किया।



मीना पुरानी यादों के संजोते हुए कहती हैं कि जब उन्होंने पहली बार प्रशिक्षणार्थी के रूप में अवनी में प्रवेश किया तो उन्हें इलैक्ट्रॉनिक्स का अर्थ भी नहीं मालूम था। मीना के अनुसार उसे इलैक्ट्रॉनिक्स के बारे में सिर्फ इतना पता था कि इससे करंट लगता है। वर्तमान में मीना करंट दौड़ते हुए तारों के साथ पूरे आत्मविश्वास के साथ कार्य कर रही हैं। मीना ने अपना कार्य सौर लालटेनों के निर्माण से आरंभ किया तथा उसके बाद अन्य विभिन्न प्रकार के सौर उपकरणों की स्थापना, रखरखाव एवं रिपेयर हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया। एक लड़की के लिये जो एक समय लड़कों से बात करने में हिचकिचाती थी तथा गाँव से बाहर अकेले निकलने का विचार तक उसे

डराता था, सौर तकनीशियन के रूप में रोजगार का अवसर उसके लिये आय उपार्जन से बढ़कर था। मीना बताती हैं कि वह अब तक 10 गाँवों के विभिन्न घरों में सौर उपकरणों की स्थापना कर चुकी हैं। मीना का आत्मविश्वास इस बात से काफी बढ़ा है कि वह उस कार्य को उतनी ही कुशलता से करने में समर्थ है जिसके संबंध में मान्यता थी कि उस कार्य को केवल पुरुष कर सकते हैं।

मीना ने अवनी से जुड़ने के बाद अपनी बहन को भी अवनी से जुड़ने हेतु प्रोत्साहित किया। मीना कहती हैं कि वह अब महसूस कर रही हैं कि पैसा माँगने एवं अपनी कमाई का पैसा होने के बीच क्या अंतर है। साथ ही यह भी बताती हैं कि मैं अपने पैसे को खर्च करने के लिये किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हूँ तथा उसका प्रयोग वह अपनी इच्छा एवं आवश्यकतानुसार करती हैं।

वर्तमान में मीना रु0 2250 मासिक रूप से अर्जित कर रही हैं। अपनी आजीविका कमाना आरंभ करने के बाद उसने सर्वप्रथम अपनी बहन के बच्चों की पढ़ाई के लिये कोष सर्जित किया। मीना दृढ़ता पूर्वक बताती हैं कि मुझे ज्यादा पढ़ाई का अवसर नहीं मिला लेकिन मैं नहीं चाहती कि परिवार का कोई और बच्चा इस अवसर को गँवाये।

बच्चों की पढ़ाई के खर्च को वहन करने के अलावा मीना ने संस्था से थोड़ा सा ऋण लेकर अपनी शादी के लिये भी कोष एकत्रित किया। शादी के बाद की सामान्य पृवृत्ति से हटकर मीना ने शादी के बाद भी कार्य करना जारी रखा है। अपने परिवार के लिये आय उपार्जित करने की उसकी इच्छा को फलीभूत करने में उसके पति एवं ससुरालवासियों का पूर्ण सहयोग मीना को प्राप्त हो रहा है।

केस स्टडी 7 केदार सिंह

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
केदार भौरियाल 34 वर्ष	12 वीं कक्षा	1998	सौर तकनीशियन	सौर तकनीशियन एवं भवन निर्माण सुपरवाइजर	<ul style="list-style-type: none"> सौर उपकरणों की स्थापना एवं रिपेयर के साथ साथ इलैक्ट्रिकल फिटिंग करने में सक्षम। निर्माण संबंधी कार्यों के सुपरविजन एवं कियान्वयन में सक्षम।



अवनी के सबसे पुराने कार्यकर्ताओं में से एक केदार सिंह भौरियाल ग्राम औलानी जिला बागेश्वर के निवासी हैं जिन्होंने कक्षा बारहवीं के तुरंत बाद अवनी के साथ कार्य करना आरंभ कर दिया। सौर उपकरणों की स्थापना हेतु प्रशिक्षण के लिये तिलोनियां, राजस्थान जाने के प्रस्ताव ने केदार को अवनी से जुड़ने के लिये प्रेरित किया। केदार ने ₹0 660 की मासिक आय पर अवनी से जुड़कर कार्य करना आरंभ किया वर्तमान में वह मासिक रूप से लगभग ₹0 5,200 अर्जित कर रहे हैं। सौर विभाग के तकनीशियन के रूप में केदार ने एक कुशल तकनीशियन के रूप में स्वयं को विकसित किया। सौर उपकरणों की रिपेयर एवं स्थापना के साथ ही वह नये तकनीशियनों को प्रशिक्षित करने में भी सक्षम हैं। इसके बाद केदार ने ग्रामीण स्तर पर सौर ऊर्जा समितियों के गठन करने की दिशा में कार्य किया। केदार ने सौर

ऊर्जा रखरखाव समितियों के खातों के संचालन एवं बैंक में खाता खोलने हेतु आभारभूत एकाऊंटिंग के भी कौशल सीखे।

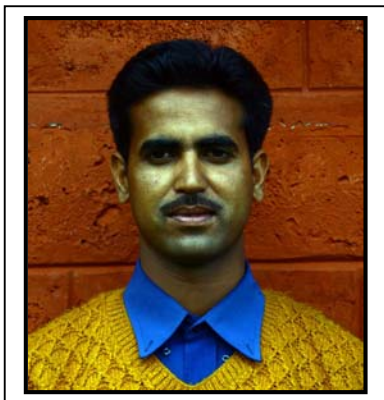
आवश्यकता पड़ने पर केदार ने अवनी केन्द्र एवं ग्रामीण स्तर पर स्थापित केन्द्रों के निर्माण कार्यों की जिम्मेदारी हेतु भी स्वयं को प्रस्तुत किया। इसके बाद से वह ग्राम सुकना एवं धरमघर केन्द्रों के निर्माण का कार्य पूर्ण करा चुका है तथा निर्माणाधीन चनकाना केन्द्र का कार्य भी देख रहा है।

केदार अपने वेतन से परिवार के खर्च चलाने में मदद करता है। केदार का कहना है कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है तथा परिवार की उतनी मदद करते हैं जितना कि कर सकते हैं। केदार का कहना है कि उसने अपनी शादी के खर्च हेतु पर्याप्त धनराशि एकत्र की। अवनी के साथ कार्य के दौरान प्राप्त एक्सपोजर के सन्दर्भ में केदार का कहना है कि यह एक शानदार अनुभव है, विभिन्न देशों के लोगों के साथ संपर्क के अलावा मैंने खुद में भी काफी गुणात्मक बदलावा महसूस किये।

एक समय में काफी उग्र स्वभाव के जवान लड़के केदार ने अवनी से जुड़ने के बाद विभिन्न लोगों से संपर्क स्थापित करने का कौशल सीखा। केदार का कहना है कि मेरी सहनशीलता एवं धैर्य आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा है। केदार के माता पिता प्रसन्न हैं कि अवनी में कार्य करने का प्रस्ताव एकदम सही समय पर प्राप्त हुआ। मैं अपनी युवावस्था में था जोकि बर्बाद हो रही थी। मैं कार्य की तलाश में इधर उधर भटक रहा था लेकिन कार्य की कोई संभावना नजर नहीं आ रही थी। केदार इस बात से खुश है कि उसका कार्य काफी चुनौतीपूर्ण है जिससे उसे खराब आदतों एवं बुरी संगत से दूर रहने का अवसर दिया। केदार का कहना है " मैं पहाड़ में कार्य करना चाहता हूँ क्योंकि मैदानी क्षेत्र असहज एवं प्रदूषित हैं। केदार का यह भी कहना है कि मेरा घर मेरे कार्यक्षेत्र के नजदीक है तथा कार्य एवं अच्छे स्वास्थ्य की प्रचुरता है, मुझे नहीं मालूम कि कहीं और मुझे यह सब एक साथ मिलेगा। केदार अवनी के साथ विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल है। उसने विभिन्न प्रदर्शनियों में भी अवनी का प्रतिनिधित्व किया है।

केस स्टडी 8 **कैलाश उपाध्याय**

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
कैलाश उपाध्याय 28 वर्ष	बीए प्रथम वर्ष	2002	कृषक	सेरीकल्चर कार्य के प्रभारी	रेशम कोकून के उत्पादन हेतु रेशमकीट पालन में सक्षम।



कैलाश उपाध्याय ग्राम खेती के निवासी हैं जो कि राईआगर से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस उम्र के अधिकांश युवाओं की तरह कैलाश भी कक्षा 12वीं के बाद रोजगार की तलाश कर रहा था हालांकि उसने महाविद्यालय में भी प्रवेश लिया था। कैलाश ने गाँव के अन्य लोगों से अवनी के बारे में जानकारी प्राप्त की। आरंभ में कैलाश ने अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी स्थित फार्म में कार्य करना आरंभ किया। इस प्रक्रिया में कैलाश ने विभिन्न प्रकार के फलों एवं सब्जियों की उत्पादन तकनीक सीखी तथा फार्म एवं फार्म उत्पादों को प्रबंधित करने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस क्रम में वर्ष 2005-06 में जब अवनी द्वारा रेशम कीटपालन एवं कीट पालन हेतु भोज्य पौधों के रोपण का कार्य आरम्भ किया गया तो कैलाश को इस कार्यक्रम के सम्पादन की जिम्मेदारी सौंपी गयी। कैलाश को ईरी रेशम कीट पालन प्रशिक्षण प्राप्ति हेतु रेशम विभाग हल्द्वानी भेजा गया, जहाँ उसने ईरी कीटपालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। धीरे-धीरे कैलाश ने स्वयं को इस कार्य हेतु अधिक प्रशिक्षित किया। वर्तमान में वह विभिन्न गाँवों में किसानों के साथ रेशम कीटपालन एवं भोज्य पौध के रोपण हेतु संचालित कार्यक्रम का समन्वय एवं संचालन कुशलता पूर्वक कर रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में किसानों को इस कार्य में प्रशिक्षित करने हेतु कैलाश ने

महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। इस कार्यक्रम से किसानों को अतिरिक्ति पूर्वक आय प्रदान करने तथा किसानों को संगठित करने की दिशा में कैलाश का प्रयास सराहनीय रहा हैं।

वर्तमान में कैलाश लगभग ₹0 4,000 मासिक ₹0 से अर्जित कर रहा है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ वह आवश्यकतानुसार अपने परिवार को भी सहायता प्रदान कर रहा है।

17, अवनी के वित्तीय परिणाम का सारांश :-

वर्ष 2008-09 के वित्तीय परिणाम का सारांश निम्नलिखित प्रकार है-

आय एवं व्यय

आय

बिक्री	3,062,336.00
अन्य आय	888,854.00
अनुदान (भारतीय)	1,931,936.00
क्लोजिंग स्टॉक	4,598,757.00
एफ0सी0आर0ए0 अनुदान	6,369,502.04
कुल	16,851,385.04

व्यय

आरम्भिक स्टॉक	4,615,433.00
अनुदान एवं अन्य व्यय	5,264,408.56
एफ0सी0आर0ए0 व्यय	3,370,924.00

अप्रयुक्त अनुदान	
लोकल	33,167.00
एफ0सी0आर0ए0	2,998,578.04
वर्ष की आय	568,874.44

कुल	16,851,385.04
-----	---------------

बैलेन्सशीट

आय के स्रोत

पूँजीगत कोश	9,428,666.76
अचल सम्पत्ति हेतु अप्रयुक्त अनुदान	13,030,055.00
अप्रयुक्त अनुदान	3,310,804.91
वर्तमान देनदारियां	1,356,591.99

कुल	27,126,118.66
-----	---------------

आय के प्रकार

अचल सम्पत्ति	14,868,206.89
कैश/बैंक	2,214,630.17
प्राप्ति योग्य अनुदान	70,100.00
अन्तिम स्टॉक	4,598,757.00
अन्य चल सम्पत्ति	5,374,424.60

कुल	27,126,118.66
-----	---------------